इस्लाम कबूल करने वाली
ग्यारह मशहूर हस्तियों की दास्तानें
इस्लाम
की छांव में
आखिर क्यों आए ये इस्लाम की गोद में
जानिए उन्हीं की जुबानी
मुहम्मद चाँद
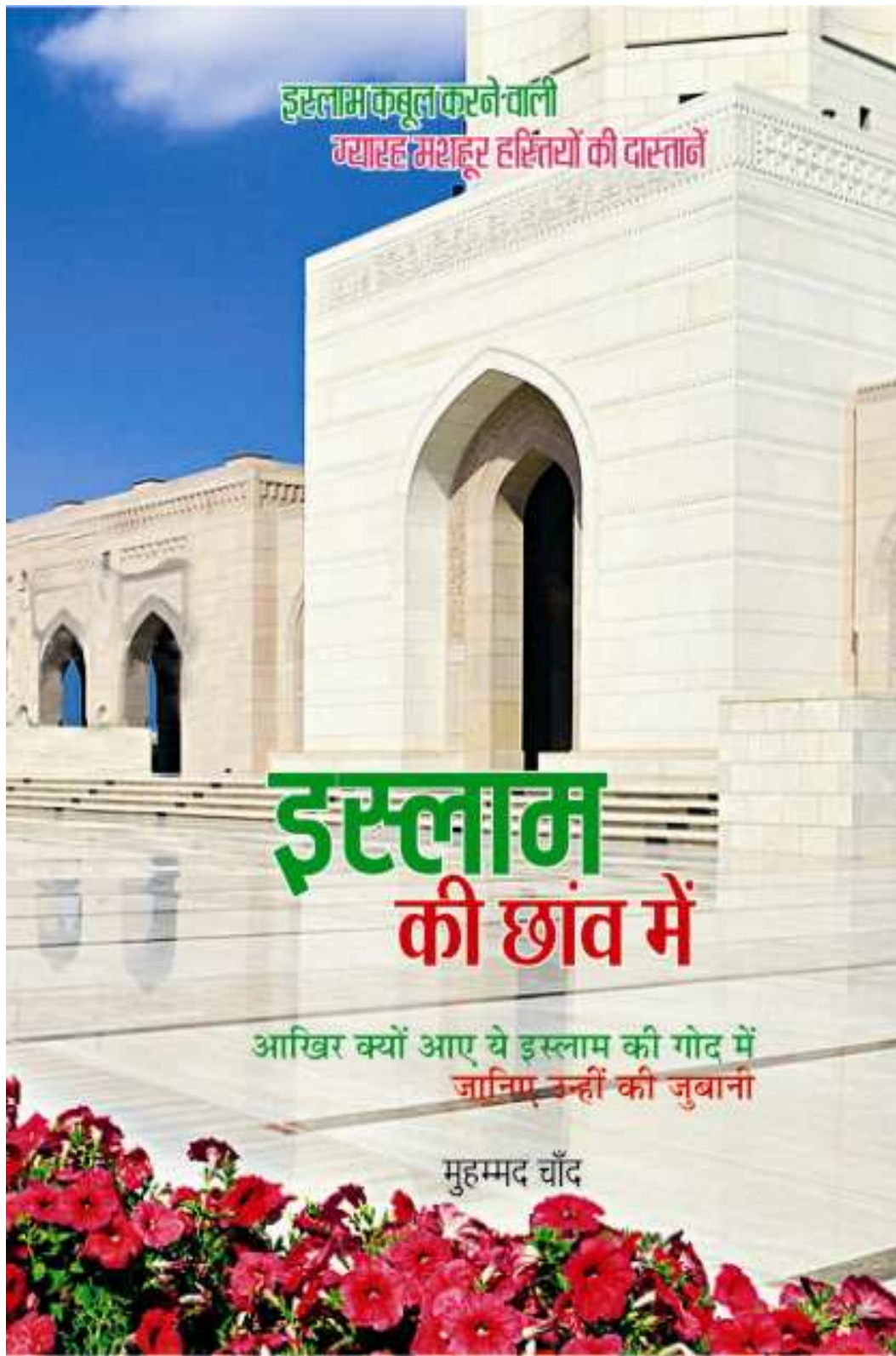
ये हैं वे शख्सियतें
इन्होंने अपनाया इस्लाम
ए. आर. रहमान
भारत के मशहूर संगीतकार
मुहम्मद अली
अमेरिका के मशहूर बॉक्सर कमला सुरैया भारत की मशहूर लेखिका और
कवयित्री
अब्दुल्लाह अडियार
तमिलनाडु के प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार और पत्रकार
मुहम्मद यूसुफ
पाकिस्तान के मशहूर क्रिकेटर
जरमैन जैक्सन
अमेरिकन सिंगर माइकल जैक्सन के बड़े भाई
कैट स्टीवन्स
इंग्लैण्ड के पॉप स्टार रह चुके।
डॉ मुराद हॉफमैन
जर्मनी के पूर्व राजदूत
करीम अब्दुल जब्बार
अमेरिका के मशहूर बास्केटबॉल खिलाड़ी
अब्दुर्रहीम ग्रीन
इंग्लैण्ड, इस्लामिक विद्वान
अब्दुल अलीम
इंग्लैण्ड के मशहूर फोटोग्राफर
हिंदी में इस्लामिक वेबसाइट www.islamicwebdunia.com

कृपाशील, दयावान ईश्वर के नाम से

उनके नाम जो
जुटे हैं
सच को तलाशने में

इस किताब पर उन सभी का हक है जो इसे दावत के लिहाज से काम में लेना चाहते हैं। आप इसका प्रिंट लेकर लोगों को दे सकते हैं और प्रकाशित भी कर सकते हैं।

E BOOK
By
www.islamicwebdunia.com

इस्लाम की छांव में

इस्लाम कबूल करने वाली
ग्यारह मशहूर
हस्तियों की दास्तानें

संकलन
अनुवाद
संपादन

मुहम्मद चाँद

दस्तक पब्लिकेशन्स

विषय-सूची

कृपाशील, दयावान ईश्वर के नाम से

दो शब्द

दुनियाभर का मीडिया इस्लाम के खिलाफ जहर उगल रहा है जबकि सच्चाई यह है कि लोगों को इसी इस्लाम में सुकून और अपनी परेशानियों का निदान नजर आ रहा है। यही वजह है कि दुनिया के विभिन्न देशों और विभिन्न धर्मों के लोग इस्लाम की शरण में आ रहे हैं। मेरी रुचि शुरू से ही ऐसे लोगों की दास्तां पढ़ने की रही है जो अपना मजहब छोड़कर इस्लाम की छांव में आए। धर्म बदलने के कारण उन पर कई तरह के कहर ढाए गए लेकिन उन्होंने सब्र किया और इस्लाम पर जमे रहे। क्योंकि वे सच्चाई से रूबरू हो गए थे। जहन में सवाल उठते थे आखिर इनकी नजर में इस्लाम में ऐसी क्या बात है कि यह पहाड़ जैसी मुसीबतों को भी बर्दाश्त कर रहे हैं। इसी उत्सुकता के चलते मैंने ऐसे कई ऐसे लोगों की दास्तानें पढ़ी जिन्होंने इस्लाम को अपनाया। सच्चाई यह है कि ऐसे लोगों के बारे में पढ़कर ही मैं इस्लाम को अच्छे तरीके से समझ पाया। यह जानकर मुझे हैरत हुई कि इस्लाम अपनाने वालों में ज्यादातर लोग वे हैं जो अच्छे पढ़े-लिखे ही नहीं बल्कि अपने फील्ड के एक्सपर्ट हैं। सारे मामलों में यही नजर आया कि इन्होंने इस्लाम को समझा,अच्छी तरह अध्ययन किया और जब सच्चाई सामने आई तो इसे अपना लिया।

मेरे दिमाग में ऐसे लोगों की दास्तानें हिन्दी में लिखने का विचार आया। मैंने देखा कि इस्लाम अपनाने वालों के बारे में मीडिया में कोई जगह नहीं है। इंटरनेट पर तो फिर भी ऐसे लोगों के बारे में पढ़ने को मिल जाएगा लेकिन हिन्दी मीडिया तो इन्हें दूर-दूर तक भी फटकने नहीं देता। इसी विचार के तहत मैंने दुनियाभर की चंद मशहूर हस्तियों को चुना जिन्होंने इस्लाम को अपनाया। मैंने इन शख्सियतों के वो इन्टरव्यू इस किताब में शामिल किए हैं जो अंग्रेजी में इंटरनेट और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। ऐसे इन्टरव्यू जिसमें उन्होंने इस्लाम अपनाने संबंधी सवालों के जवाब दिए।

मैं यहां यह भी बताना जरूरी समझता हूं कि मेरा मकसद दूसरे धर्मों का अनादर करना कतई नहीं है बल्कि इस्लाम की उन खूबियों को लोगों के सामने लाना है जिनको दुनियाभर के इंसानों ने महसूस किया और इन्हें अपनाया। यह किताब उन लोगों के आधारहीन आरोप का मजबूत जवाब है जो यह कहते हैं कि इस्लाम तो तलवार से फैला है। इस किताब को पढ़कर देखें कि वो कौनसी तलवार है जिसके सामने यह बड़ी-बड़ी हस्तियां भी नतमस्तक हो गईं। मकसद मुसलमानों की नौजवान पीढ़ी को यह बताना भी है कि उन्हें एहसास नहीं कि उनके पास कैसी अमूल्य धरोहर है जिसकी कीमत दूसरे धर्म के लोग पहचान रहे हैं और उन्हें इस बेशकीमती धरोहर का एहसास तक नहीं।

एक छोटी सी कोशिश है। उम्मीद है पसंद आएगी बिना किसी के दिल को चोट पहुंचे। मैं यहां अल्लाह का शुक्र अदा करने के साथ ही उन लोगों का भी शुक्रिया अदा करना चाहूंगा जिन्होंने मेरी इस छोटी सी कोशिश में सहयोग किया।

मुहम्मद चाँद
muhammadchand@gmail.com

अपनी मां करीमा बेगम के साथ ए आर रहमान

हमने इस्लाम कबूल करने का फैसला अचानक नहीं बल्कि अच्छी तरह सोच-समझकर किया । यह फैसला मेरा और मेरी मां दोनों का सामूहिक फैसला था। हम दोनों सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरण में आना चाहते थे।

-ए. आर. रहमान

भारत के मशहूर संगीतकार

संगीतकार ए आर रहमान ने 2006 में अपनी मां के साथ हज अदा किया था। हज पर गए रहमान से अरब न्यूज के सैयद फैसल अली ने बातचीत की। यहां पेश है 13 जनवरी 2006 को सैयद फैसल अली की रहमान से हुई गुफ्तगू।

मुझे मुस्लिम होने पर फख्र है

भारत के मशहूर संगीतकार ए आर रहमान किसी परिचय के मोहताज नहीं है। तड़क-भड़क और शोहरत की चकाचौंध से दूर रहने वाले ए आर रहमान की जिंदगी ने एक नई करवट ली जब वे इस्लाम की आगोश में आए। रहमान कहते हैं- इस्लाम कबूल करने पर जिंदगी के प्रति मेरा नजरिया बदल गया। भारतीय फिल्मी-दुनिया में लोग कामयाबी के लिए मुस्लिम होते हुए हिन्दू नाम रख लेते हैं,लेकिन मेरे मामले में इसका उलटा है यानी था मैं दिलीप कुमार और बन गया अल्लाह रक्खा रहमान। मुझे मुस्लिम होने पर फख्र है।

संगीत में मशगूल रहने वाले रहमान हज के दौरान मीना में दीनी माहौल से लबरेज थे। पांच घण्टे की मशक्कत के बाद अरब न्यूज ने उनसे मीना में मुलाकात की। मगरिब से इशा के बीच हुई इस गुफ्तगू में रहमान का व्यवहार दिलकश था। कभी मूर्तिपूजक रहे रहमान अब इस्लाम के बारे में एक विद्वान की तरह बात करते हैं।

दूसरी बार हज अदा करने आए रहमान इस बार अपनी मां को साथ लेकर आए। उन्होंने मीना में अपने हर पल का इबादत के रूप में इस्तेमाल किया। वे अराफात और मदीना में भी इबादत में जुटे रहे और अपने अन्तर्मन को पाक-साफ किया।

अपने हज के बारे में रहमान बताते हैं-अल्लाह ने हमारे लिए हज को आसान बना दिया। इस पाक जमीन पर गुजारे हर पल का इस्तेमाल मैंने अल्लाह की इबादत के लिए किया है। मेरी अल्लाह से दुआ है कि वह मेरे हज को कबूल करे।

उनका मानना है कि शैतान के कंकरी मारने की रस्म अपने अंतर्मन से संघर्ष करने की प्रतीक है। इसका मतलब यह है कि हम अपनी बुरी ख्वाहिशों और अन्दर के शैतान को खत्म कर दें। वे कहते हैं-मैं आपको बताना चाहूंगा कि इस साल मुझे मेरे जन्मदिन पर बेशकीमती तोहफा मिला है जिसको मैं जिन्दगी भर भुला नहीं पाऊंगा।

इस साल मेरे जन्मदिन 6 जनवरी को अल्लाह ने मुझे मदीने में रहकर पैगम्बर की मस्जिद में इबादत करने का अनूठा इनाम दिया। मेरे लिए इससे बढ़कर कोई और इनाम हो ही नहीं सकता था। मुझे बहुत खुशी है और खुदा का लाख-लाख शुक्र अदा करता हूं।

इस्लाम स्वीकार करने के बारे में रहमान बताते हैं- यह 1989 की बात है जब मैंने और मेरे परिवार ने इस्लाम स्वीकार किया। मैं जब नौ साल का था तब ही एक रहस्यमयी बीमारी से मेरे पिता गुजर गए थे। जिंदगी में कई मोड़ आए। वर्ष-1988 की बात है जब मैं मलेशिया में था। मुझे सपने में एक बुजुर्ग ने इस्लाम धर्म अपनाने के लिए कहा। पहली बार मैंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन यही सपना मुझे कई बार आया। मैंने यह बात अपनी मां को बताई। मां ने मुझे प्रोत्साहित किया और कहा कि मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के इस बुलावे पर गौर और फिक्र करूं। इस बीच 1988 में मेरी बहन गम्भीर रूप से बीमार हो गई। परिवार की पूरी कोशिशों के बावजूद उसकी बीमारी बढ़ती ही चली गई। इस दौरान हमने एक मुस्लिम धार्मिक रहबर की अगुवाई में अल्लाह से दुआ की। अल्लाह ने हमारी सुन ली और आश्चर्यजनक रूप से मेरी बहन ठीक हो गई। और इस तरह मैं दिलीप कुमार से ए आर रहमान बन गया। इस्लाम कबूल करने का फैसला अचानक नहीं लिया गया बल्कि काफी सोच समझकर लिया। यह फैसला मेरा और मेरी मां दोनों का सामूहिक फैसला था। हम दोनों सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरण में आना चाहते थे। अपने दुख दूर करना चाहते थे। शुरू में कुछ शक और शुबे दूर करने के बाद मेरी तीनों बहिनों ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया। मैंने उनके लिए आदर्श बनने की कोशिश की।

6 जनवरी 1966 को चेन्नई में जन्मे रहमान ने चार साल की उम्र में प्यानो बजाना शुरू कर दिया था। नौ साल की उम्र में ही पिता की मृत्यु होने पर रहमान के नाजुक कंधों पर भारी जिम्मेदारी आ पड़ी। मां कस्तूरी अब करीमा बेगम और तीन बहिनों के भरण-पोषण का जिम्मा अब उस पर था। ग्यारह साल की उम्र में ही वे पियानो वादक की हैसियत से इल्याराजा के ग्रुप में शामिल हो गए। उनकी मां ने उन्हें प्रोत्साहित किया और वे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहीं।

रहमान ने सायरा से शादी की। उनके तीन बच्चे हैं-दस और सात साल की दो बेटियां और एक तीन साल का बेटा।

रहमान ने बताया कि इबादत करने से उनका तनाव दूर हो जाता है और उन्हें शान्ति मिलती है। वे कहते हैं- मैं आर्टिस्ट हूं और काम के भयंकर दबाव के बावजूद मैं पांचों वक्त की नमाज अदा करता हूं। नमाज से मैं तनावमुक्त रहता हूं और मुझमें उम्मीद व हौसला बना रहता है कि मेरे साथ अल्लाह है। नमाज मुझे यह एहसास भी दिलाती रहती है कि यह दुनिया ही सब कुछ नहीं है,मौत के बाद सबका हिसाब लिया जाना है।

रहमान ने अपना पहला हज 2004 में किया। इस बार उनकी मां उनके साथ थी। वे कहते हैं-इस बार मैं अपनी पत्नी को भी हज के लिए लाना चाहता था,लेकिन मेरा बेटा केवल तीन साल का है, इस वजह से वह नहीं आ सकी। अगर अल्लाह को मंजूर

अपनी बीवी सायरा के साथ ए आर रहमान

हुआ तो मैं फिर आऊंगा,अगली बार पत्नी और बच्चों के साथ।

वे कहते हैं-इस्लाम शान्ति,प्रेम,सहअस्तित्व,सब्र और आधुनिक धर्म है। लेकिन चन्द मुसलमानों की गलत हरकतों के कारण इस पर रूढ़िवादिता की गलत छाप लग गई है। मुसलमानों को आगे आकर इस्लाम की सही तस्वीर पेश करनी चाहिए। अपने ईमान और यकीन को सही रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत करना चाहिए। मुसलमानों की इस्लामिक शिक्षाओं से अनभिज्ञता दिमाग को झकझोर देती है।

रहमान कहते हैं-मुसलमानों को इस्लाम के बुनियादी उसूलों को अपनाना चाहिए जो कहते हैं-अपने पड़ौसियों के साथ बेहतर सुलूक करो,दूसरों से हंसकर मिलो,एक ईश्वर की इबादत करो और गरीबों को दान दो। इंसानियत को बढ़ावा दो,और किसी से दुश्मनी मत रखो। इस्लाम यही संदेश लेकर तो आया है। हमें अपने व्यवहार,आदतों और कर्मों से दुनिया के सामने इंसानियत की एक अनूठी मिसाल पेश करनी चाहिए।

पैगम्बर मुहम्मद सल्ललाहो अलेहेवसल्लम ने अपने अच्छे व्यवहार,सब्र और सच्चाई के साथ ही इस्लाम का प्रचार किया। आज इस्लाम को लेकर दुनिया भर में फैली गलतफहमियों को दूर किए जाने की जरूरत है।

मैंने इस्लाम का कई महीनों तक गहन अध्ययन किया और मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इस्लाम सच्चा धर्म है, जो प्रकाशमान है।

– मुहम्मद अली

अमेरिका के मशहूर बॉक्सर

27 फरवरी 1964 को मुहम्मद अली ने एसोसिएटेड प्रेस के सामने इस्लाम धर्म अपनाने का ऐलान किया। यहां पेश है उस वक्त एसोसिएटेड प्रेस के सामने मुहम्मद अली का किया गया खुलासा। साथ ही अन्य मौकों पर इस्लाम अपनाने को लेकर दिए उनके बयान।

इस्लाम में सुकून है

दुनिया के तीन बार हैविवेट चैम्पियन रह चुके अमेरिका के मशहूर बॉक्सर कैशियस क्ले जब इस्लाम कबूल करके मुहम्मद अली बने तो अमेरिका में मानो तूफान आ गया। मुहम्मद अली का इस्लाम में दाखिल होना अमेरिका में इस्लाम के फैलने में महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। इस घटना से अमेरिका में चमात्कारिक रूप से इस्लाम के आगे बढ़ने में कामयाबी मिली। 17 जनवरी 1942 को जन्मे मुहम्मद अली 22 साल की उम्र में 1964 में इस्लाम के आगोश में आ गए।

एसोसिएटेड प्रेस के सामने इस्लाम धर्म अपनाने का ऐलान करते हुए मुहम्मद अली ने बताया कि आज उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है। इस्लाम वह रास्ता है जिसमें आपको हरदम सुकून व चैन मिलता है।

बाईस वर्षीय क्ले ने कहा–वे ऐसे मुसलमानों को काले मुसलमान कहते हैं,दरअसल यह यहां की प्रैस का दिया हुआ शब्द है। यह नाम उचित नहीं है। इस्लाम तो ऐसा धर्म है जिसके मानने वाले दुनियाभर में करोड़ों लोग हैं और मैं भी उनमें से एक हूं।

मैंने इस्लाम का कई महीनों तक गहन अध्ययन किया और मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इस्लाम सच्चा धर्म है जो प्रकाशमान है। जैसे एक पक्षी रात में रोशनी को देखकर चहचहाने लगता है और अंधेरे में चुप रहता है। अब मुझे भी रोशनी नजर आ गई है और मैं भी खुशी से चहचहा रहा हूं।

जब मुहम्मद अली से पूछा गया कि लोग आपके धर्म परिवर्तन के बारे में जानने के बहुत इच्छुक हैं तो उनका जवाब था–

लोग दूसरों के धर्म के बारे में जानना नहीं चाहते लेकिन वे मेरे धर्म के बारे में जानना चाहते हैं क्योंकि मैं चैम्पियन हूं। मैं विश्व विजेता हूं, इस वजह से पूरी दुनिया मेरे धर्म परिवर्तन को लेकर आश्चर्यचकित है।

गोरे लोग हमें काले मुस्लिम कहकर पुकारते हैं, लेकिन हमारी वास्तविक पहचान तो इस्लाम मजहब है। इस्लाम का अर्थ है शान्ति,फिर भी लोग हमें दूसरों से नफरत करने वाले समझते हैं। ऐसे लोगों का आरोप है हम अमेरिका पर कब्जा करना चाहते हैं। वे हम मुसलमानों को साम्यवादी कहते हैं। सच्चाई यह नहीं है। अल्लाह को मानने वाले लोग तो

दुनिया में सबसे अच्छे इंसान हैं। वे हथियार नहीं रखते। वे दिन में पाँच बार नमाज अदा करते हैं। मुस्लिम औरतें पूरी पोशाक पहनती हैं। वे व्यभिचार नहीं करतीं। मुसलमान दुनिया में शान्ति और चैन के साथ जिंदगी गुजारना चाहते हैं। वे किसी से नफरत नहीं करते। किसी भी तरह की मुश्किल को बढ़ावा नहीं देते। वे चुपचाप अपनी बैठकें करते हैं जिनमें किसी तरह के झगड़े और नफरत फैलाने की बात नहीं होती।

मुहम्मद अली ने कहा कि इस्लाम से उन्हें दिली सुकून हासिल हुआ है और हाल ही लिस्टन पर उनकी रोमांचक जीत अल्लाह की मदद से ही हुई है। वे कहते हैं- इस मुकाबले में खुदा मेरे साथ था,बिना खुदा की मदद के मेरे लिए जीतना मुश्किल था।

उन्होंने कहा-गौरे लोग इस बात से परेशान हैं कि मुस्लिम जमाअत ने नीग्रो लोगों में आपसी एकता को जबरदस्ती से प्रज्ज्वलित किया है। मैं ऐसा नहीं मानता क्योंकि प्रतीकात्मक और थोपी गई एकता अस्थायी होती है और यह नीग्रो समस्या का स्थायी हल नहीं है। हमारा मानना है कि किसी को अपना मजहब दूसरे पर नहीं थोपना चाहिए। मेरे पास रोज बहुत से लोगों के टेलीफोन आते हैं। वे मुझे सिर्फ इशारा करने को कहते हैं और सुझाव देते हैं कि यह आपसी भाईचारे के लिए अच्छा होगा कि मैं किसी गौरी महिला से शादी कर लूं। लेकिन मैं किसी के कहने पर ऐसा नहीं करूंगा। मैं तो अपने ही तरह के लोगों के बीच रहना चाहता हूं और उनके साथ खुश हूं। यह फितरती बात है कि एक ही संस्कृति और नस्ल के लोगों को एक साथ रहना चाहिए जैसे कि जंगल के जानवर भी ग्रुप में रहते हैं। मैक्सिकन,पुइव्रो रिकन्स,चीनी और जापानी अगर एक जगह रहते हैं,तो ज्यादा अच्छी तरह रहते हैं। जैसे मै गर्म मैक्सिकन खाना पसंद नहीं करता। अगर कोई मुझे यह खाने को दे तो मुझे यह अच्छा नहीं लगेगा। इसी तरह हो सकता है आप भी वो पसंद नहीं करे जो मुझे पसंद हो।

गुलाम कैन्टुकी शहर से ताल्लुक रखने वाला यह युवा यह जानकर बेहद गुस्सा हुआ कि कुछ लोग उसके इस्लाम अपनाने के मामले को इस बात से जोड़कर देख रहे हैं कि मानो मैं किसी खतरनाक मकसद को अंजाम देने वाला हूं। वह क्रोधित होकर कहता है- मैं एक अच्छा लड़का हूं। मैंने कभी कोई गलत काम नहीं किया। मैं कभी ना जेल गया ना अदालत। मैं उन गौरी औरतों की तरफ भी ध्यान नहीं देता जो मुझे आंखों के इशारे करती हैं।

मैं उन लोगों पर खुद को नहीं थोपता जो मुझे पसंद नहीं करते। जहां मेरा सम्मान नहीं होता,वहां मैं बेचैनी महसूस करता हूं। मैं गौरे लोगों को पसंद करता हूं। मैं अपने लोगों को भी पसंद करता हूं। वे बिना किसी परेशानी के एक साथ रह सकते हैं। अगर कोई शान्तिप्रिय रास्ता अपनाता है तो आप उसे बुरा नहीं कह सकते,अगर फिर भी आप ऐसा करते हैं तो शान्ति का ही विरोध करते हैं।

मैं मक्का जाना चाहता हूं

संयुक्त राष्ट्र के दो घण्टे के दौरे के दौरान कल मुहम्मद अली ने अपनी मक्का जाने की योजना के बारे में बताया। अफ्रीका और एशिया के नुमाइंदों को मुहम्मद अली ने बताया कि अब मैं और इंतजार नहीं कर सकता और जल्दी वहां की यात्रा करना चाहता हूं। मैं उन लोगों से मिलना चाहता हूं जिनका मैं चैम्पियन हूं। जैसे ही तैयारी पूरी हुई मैं अपना दौरा शुरू कर दूंगा, शायद एक महीने में।

पिछले महीने विश्व हैवीवेट बॉक्सिंग चैम्पियनशिन का खिताब सोनी लिस्टन से छीनने के बाद उन्होंने इस्लाम कबूल करने का ऐलान कर दिया था। वह कहता है उसके पास मुस्लिम मुल्कों से निमंत्रण की बाढ़ सी आ गई है। लेकिन वह पहले मक्का का दौरा करना चाहता है।

मक्का जाने की योजना का ऐलान-5 मार्च 1964-स्टीव केडी

हज का अनूठा नजारा

यूं तो मेरी जिंदगी में कई अहम पड़ाव आए,लेकिन हज के दौरान अराफात पहाड़ पर खड़ा होना मेरी जिंदगी का महत्वपूर्ण,अद्‌भुत और अनूठा पल था। मैं यह देखकर अभिभूत हो गया कि वहां इकट्‌ठे डेढ मिलियन हजयात्री अल्लाह से अपने गुनाहों को माफ करने की गुजारिश कर रहे थे और साथ ही उसकी दया की तमन्ना कर रहे थे। मेरे लिए यह उत्साह भर देने वाला अनूठा अनुभव था। अलग-अलग रंग,जाति,देश,नस्ल,अमीर,गरीब सब सिर्फ दो चादरें पहनकर बिना किसी बड़प्पन के अल्लाह की इबादत में मशगूल थे। यह इस्लाम में बराबरी का व्यावहारिक नमूना था।

जैसा 15 जुलाई 1989 का उन्होंने अल मदीना, जेद्‌दा को बताया।

इस्लाम प्रेम का धर्म है, यह औरतों को संरक्षण देता है। अल्लाह गुनाहों को माफ कर देता है। मैं अल्लाह से माफी की दुआ करती हूं। मैं मुस्लिम औरतों की परम्परागत जीवन-शैली को पसन्द करती हूं।

– कमला सुरैया

भारत की मशहूर लेखिका और कवयित्री

अंग्रेजी के पाठकों में कमला दास और मलयालम के पाठकों में माधवी कुट्टी के नाम से मशहूर लेखिका और कवयित्री ने दिसम्बर 1999 ई. में इस्लाम कबूल करके अपना नाम सुरैया रख लिया तो केरल के साहित्य, समाज, धर्म और संस्कृति के क्षेत्रों में जैसा तूफान आया, वैसा वहां के इतिहास में किसी एक व्यक्ति के धर्म बदलने से नहीं आया था।

यह लेख हिन्दी मासिक पत्रिका कान्ति से लिया है।

इस्लाम औरतों को संरक्षण देता है

केरल के सामाजिक जीवन के पाखंडों को बेनकाब करने वाली मशहूर लेखिका और कवयित्री कमला सुरैया के इस्लाम कबूल कर लेने से केरल के मुस्लिम समुदाय में बड़ा उत्साह था। 'अमियोप्पा' को बधाई देने के लिए इस समुदाय के औरत-मर्दों का तांता लग गया था। दैनिक 'मातृभूमि' के पूर्व सम्पादक वी.एस. नायर और मलयालम की जानी-मानी कवयित्री बालमणि अम्मा की बेटी माधवी कुट्टी को उनके करीबी 'अमियोप्पा' के नाम से ही पुकारते थे। उनका जन्म एक साहित्यिक और बौद्धिक वातावरण में 31 मार्च 1934 ई. में केरल के मालाबार जिले के पुन्नायुर्कुलम गांव में हुआ था।

उन्होंने किशोरावस्था में ही अपने चाचा नलपत नारायण मेनन से प्रेरित होकर कविता लिखना शुरू किया था। उनकी मां बालमणि अम्मा भी मलयालम की बहुत मशहूर कवयित्री थीं। माधव कुट्टी पर उनका भी बहुत प्रभाव पड़ा था। अमियोप्पा की शिक्षा-दीक्षा 15 वर्ष की उम्र तक घर पर ही हुई थी। 15 वर्ष की उम्र में ही उनकी शादी के. माधव दास से कर दी गयी थी। भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यकारी गवर्नर रहे के. माधव दास की विधवा कमला दास तीन बेटों की मां हैं। कोच्चि में स्टेट लाइब्रेरी कौंसिल द्वारा आयोजित एक साहित्यिक सेमीनार का उद्‌घाटन करते समय 10 दिसम्बर 1999 को अपने इस्लाम कबूल करने का ऐलान करते हुए उन्होंने कहा था कि वे 27 वर्षों से इस्लाम कबूल करने की सोच रही थीं। 27 वर्ष पूर्व मुम्बई में दो मुस्लिम लड़कों को गोद लेते समय यह विचार उनके मन में आया था। उन्होंने कहा : 'मैं एक विधवा हूं। मेरे बच्चे मेरे साथ नहीं हैं। मेरा कोई नहीं है। मैं अनाथ हूं। इस्लाम प्रेम का धर्म है, यह क्षमा का धर्म है। यह महिलाओं को संरक्षण देता है और मुझे संरक्षण और राहत की जरूरत है। मुझे जिस राहत की जरूरत है वह मुझे इस्लाम में हासिल हो सकेगी। अत: मैं इस्लाम की शीतल छाया तले आ गयी हूं। रमजान हृदय-परिवर्तन का, इन्किलाब का महीना है। इसलिए मैंने इस्लाम कबूल कर लिया है।''

'' मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि इस्लाम प्रेम का धर्म है, यह औरतों को संरक्षण देता है। अल्लाह गुनाहों को माफ कर देता है। मैं अल्लाह से माफी की दुआ करती हूं। मैं

मुस्लिम औरतों की परम्परागत जीवन-शैली को पसन्द करती हूं। ''

''इस्लाम की सुगमता मुझे बहुत पसन्द आयी। इस्लाम एकमात्र ऐसा धर्म है जिसमें अल्लाह की बन्दगी और उसके आज्ञापालन की स्पष्ट धारणा है। यह प्रेम मार्ग है, जिस पर सभी व्यक्ति को चलना चाहिए, ताकि वे अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को सफल बना सकें।''

दुनिया भर के करोड़ों लोगों ने उनके इस निणर्य की प्रशंसा की। कुछ लोगों ने कटु आलोचना भी की। कमला सुरैया ने मुसलमानों के चार विवाह की प्रथा की सराहना की है और इसे सही ठहराया है। उन्होंने कहा कि यह उदारवादी व्यवस्था है जहां एक मर्द चार औरतों को जीवन-सहारा प्रदान करता है। परदा प्रथा को नारी के मान-सम्मान का प्रतीक बताते हुए उन्होंने कहा कि परदा बहुत राहत देने वाली, नारी चरित्र को दृढ़ता प्रदान करने वाली और मर्दों की बुरी निगाह से बचाने वाली चीज है। परदे में औरत सम्मानित होती है। कोई भी उसे छूता नहीं और न ही छेड़छाड़ करता है। उनके नाम पर अनेकानेक सुरैया परदा हाउसेज, सुरैया परदा पैलेसेज खुल गए। इस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा था कि मैं यह जानकर बहुत खुश हूं कि मेरे नाम पर परदा हाउसेज खुल गए हैं। मैं महसूस करती हूं कि मैं खुशी के मारे बच्चों की भांति उछल-कूद रही हूं। मैं परदे को बहुत पसन्द करती हूं।

कमला दास किशोरावस्था से ही लिखती रही हैं। अंग्रेजी-मलयालम दोनों भाषाओं में उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, फीचर इत्यादि गद्य-पद्य की प्रायः सभी विधाओं में लिखा है और खूब लिखा है, बहुत अच्छा लिखा है। मलयालम में 30 उपन्यास और अंग्रेजी-मलयालम में अनेक कविता संग्रह और कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कुछ महत्वपूर्ण कृतियां हैं : दी नॉवल अल्फाबेट ऑफ लस्ट (1997), पद्मावतीः दी हरलोट एण्ड अदर स्टोरिज (1992, कहानी संग्रह), समर इन कलकत्ता(कविता संग्रह), दी डिसेंडेंट्स (1967, कविता संग्रह), दी ओल्ड प्ले हाउस एण्ड अदर पॉयम्स (1973, कविता संग्रह), दी अन्नामलाई पॉयम्स (1985, कविता संग्रह), ओनली द सोल नोज हाउ टू सिंग (1996, कविता संग्रह), माई स्टोरी (1976, एन्ते कथा अर्थात् आत्मकथा), पलायन (1990, उपन्यास), नेयप्यासम (1991, उपन्यास), दयारीक्कुरीप्पुकल (उपन्यास, 1992) इत्यादि।

कमला सुरैया की सबसे मशहूर कृति 'माई स्टोरी' है। यह उनकी आत्मकथा है, जो 15 से अधिक भाषाओं में छप चुकी है। इसमें इसका उल्लेख है कि माधवी कुट्टी ने कैसे परम्परागत मूल्यों के खिलाफ जीवन जिया है। इसे पढ़ने के बाद केरल के सामाजिक हलके में भूचाल आ गया था। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक जापान और कनाडा में पाठ्यपुस्तक के रूप में पढ़ाई जा रही है। उन्हें 1964 में उनके कविता संग्रह 'दी साइरंस' के लिए

एशियन पोयट्री पुरस्कार, 1965 में 'समर इन कलकत्ता' के लिए केंटस अवार्ड, 1969 में कहानी 'थनप्पू' के लिए केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1997 में अपने बचपन के संस्मरणों 'बालकाल स्मरणकल' (बाल्यकाल के संस्मरण) के लिए वायालार पुरस्कार मिला। उनकी कोई औपचारिक शिक्षा नहीं हुई, 15 वर्ष की उम्र तक घर पर ही उनकी शिक्षा हुई। लेकिन उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि मिल चुकी है। इन पुरस्कारों और सम्मानों के अतिरिक्त वे अकेली मलयाली साहित्यकार हैं, जिनका नाम अंग्रेजी साहित्य में योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित हुआ था।

इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद वे इस्लामी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में लगीं रहीं। वे केरल की राजनीतिक पार्टी लोक सेवादल की प्रमुख रह चुकी हैं। 31मई 2009 को कमला सुरैया इस दुनिया को अलविदा कह गईं।

मुस्लिम औरतों की जीवन-शैली पसन्द है

टाइम्स ऑफ इण्डिया: 5 दिसम्बर 1999

आपने इस्लाम कबूल करने का फैसला कब किया ?

ठीक-ठीक समय तो याद नहीं। मैं समझती हूं, यह 27 वर्ष पहले की बात है।

आपने इतने लम्बे समय तक इन्तजार क्यों किया ?

सत्तर के दशक में, जब मैंने इस पर सबसे पहले अपने पति से बात की तो उन्होंने इन्तजार करने को कहा। उन्होंने मुझे इस्लाम पर किताबें पढ़ने की सलाह दी। मैंने दोबारा 1984 ई. के लोकसभा चुनावों से पहले धर्म बदलने के बारे में सोचा था। लेकिन उस समय मेरे सभी बच्चों की न तो शादी हुई थी और न वे किसी अच्छे काम पर लगे थे। मैं अपने निर्णय का प्रभाव उनकी जिन्दगी पर नहीं डालना चाहती थी। अब वे सभी अच्छी तरह सेटल्ड हो गए हैं और खुश हैं। इसलिए मैंने अब इस्लाम कबूल करने का ऐलान किया।

इस्लाम से आपका परिचय किसने कराया ?

इस्लाम से मेरा पहला परिचय मुंबई में दो मुस्लिम नेत्रहीन बच्चों, इरशाद अहमद और इम्तियाज अहमद के माध्यम से हुआ। दोनों बच्चे नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड द्वारा मेरे पास भेजे गये थे। उस समय मैं स्वैच्छिक रूप से नेत्रहीन बच्चों को पढ़ाया-लिखाया करती थी। वे बच्चे मेरे फ्लैट बैंक हाउस (चर्चगेट, मुंबई) में मेरे साथ रहते थे। मुझे महसूस हुआ कि उन्हें इस्लामी साहित्य भी पढ़ाया जाना चाहिए,इसलिए मैं उन्हें इस्लामी किताबें भी पढ़ाया करती थी।

इस्लाम में ऐसा क्या था जिसने आपको आकर्षित किया ?

मैं परदा बहुत पसन्द करती हूं, जो मुस्लिम औरतें पहनती हैं। मैं मुस्लिम औरतों की पारम्परिक जीवन-शैली को पसन्द करती हूं।

लेकिन क्या परदा आपकी आजादी पर पाबन्दी नहीं लगाता?

मैं अब आजादी नहीं चाहती। मैंने आजादी का बहुत इस्तेमाल कर लिया। आजादी मेरे लिए बोझ बन गई थी। अपने जीवन को नियमित और अनुशासित बनाने के लिए हिदायत चाहती हूं। मैं एक आका चाहती हूं, जो मेरी हिफाजत करे। मैं अल्लाह की बन्दी,उसकी आज्ञाकारी बनना चाहती हूं। सचमुच, मैं पिछले 24 सालों से कभी-कभार बुर्का पहनती रही हूं। मैं बाजारों और विदेशों में भी बुर्का पहनकर जाती रही हूं। मेरे पास बहुत-से बुर्के हैं। परदे में औरत की इज्जत की जाती है। कोई भी उसे छूता नहीं और न ही छेड़छाड़ करता है। आपको पूरी हिफाजत मिलती है।

इस्लाम कबूल करने का तात्कालिक कारण क्या था?

हाल ही में मैं एक कार से मालाबार से कोच्चि जा रही थी। मैं सुबह 5:45 पर चली थी। मैंने उगते हुए सूरज को देखा। आश्चर्यजनक रूप से उसका रंग डूबते हुए सूर्य जैसा था। वह मेरे साथ सफर करता रहा। सात बजे वह सफेद हो गया। वर्षों से मैं उस निशान की तलाश में थी जो मुझसे कहे कि अब इस्लाम कबूल कर लो। आखिरकार, मुझे वह पैगाम मिल ही गया।

क्या आपके बच्चों ने आपके इस फैसले को मान लिया?

हां, बिलकुल। उन्होंने मेरे फैसले का सम्मान किया।

सारी दुनिया निकट भविष्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस्लाम को अपना लेगी।

– अब्दुल्लाह अडियार
तमिलनाडु के प्रसिद्ध कवि,
उपन्यासकार और पत्रकार

इस्लाम कबूल करने के पहले अब्दुल्लाह अडियार डी.एम.के. के प्रसिद्ध समाचार–पत्र 'मुरासोली' के 17 वर्षों तक संपादक रहे। डी.एम.के. नेता सी.एन. अन्नादुराई जो बाद में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री भी रहे, ने अब्दुल्लाह अडियार को संपादक पद पर नियुक्त किया था। अब्दुल्लाह अडियार ने 120 उपन्यास, 13 नाटक और इस्लाम पर 12 पुस्तकों की रचनाएं की।

एक पत्रकार का इस्लाम कबूल करना

जनाब अब्दुल्लाह अडियार महरहूम तमिल भाषा के प्रसिद्ध कवि, पत्रकार, उपन्यासकारऔर पटकथा लेखक थे। उनका जन्म 16 मई 1935 को त्रिरूप्पूर (तमिलनाडु) में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा कोयम्बटूर में हुई। वे नास्तिक थे, लेकिन विभिन्न धर्मों की पुस्तकें पढ़ते रहते थे। किसी पत्रकार और साहित्यकार को विभिन्न धर्मों के बारे में भी जानकारी रखनी पड़ती है। जनाब अब्दुल्लाह अडियार अध्ययन के दौरान इस परिणाम पर पहुंचे कि इस्लाम ही सच्चा धर्म है और मनुष्य के कल्याण की शिक्षा देता है। आखिरकार 6 जून 1987 ई. को वे मद्रास स्थित मामूर मस्जिद गए और इस्लाम कबूल कर लिया।

इस्लाम कबूल करने के पहले वे डी.एम.के. के प्रसिद्ध समाचार-पत्र 'मुरासोली' के 17 वर्षों तक संपादक रहे। डी.एम.के. नेता सी.एन. अन्नादुराई जो बाद में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री भी रहे, ने जनाब अडियार को संपादक पद पर नियुक्त किया था। जनाब अडियार ने 120 उपन्यास, 13 नाटक और इस्लाम पर 12 पुस्तकों की रचनाएं की। इमरजेंसी के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया और काफी प्रताड़ित किया गया। जेल में उन्होंने जनाब यूसुफ अली का कुरआन मजीद का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा और उससे काफी प्रभावित हुए। उन्होंने इस्लाम पर (इस्लाम जिससे मुझे प्यार है) पुस्तिका लिखी, जिसका बाद में हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, सिन्धी, मलयालम और उर्दू में अनुवाद हुआ। इस पुस्तक में उन्होंने इस्लाम की तमाम खूबियों को बयान किया है साथ ही इस्लाम से जुड़ी गलतफहमियों को दूर करने का प्रयास किया।

उनकी पत्नी थयम्मल जो ईसाई थीं, इस पुस्तक को पढ़कर मुसलमान हो गयीं। इसे पढ़कर उत्तर प्रदेश के एक जमीदार 1987 ई. में मुसलमान हो गए। जनाब अब्दुल्लाह अडियार को पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल जियाउल हक ने पाकिस्तान आमंत्रित किया और विशेष अतिथि के रूप में उनका स्वागत किया। वे प्रखर वक्ता भी थे और इस्लाम पर धाराप्रवाह बोलते थे। उनके ब्रिटेन में अनेक संभाषण हुए, जिनका विषय था हजरत मुहम्मद (सल्ल.) का पवित्र जीवन। इनके कैसेट उपलब्ध हैं।

वे तमिलभाषियों के आमंत्रण पर श्रीलंका और सिंगापुर भी गए। 1932 में तमिलनाडु सरकार ने तमिल साहित्य के विशिष्ट पुरस्कार 'कलाईमम्मानी' से उन्हें पुरस्कृत किया। इमरजेंसी के बाद उन्होंने 'नीरोतम' (पत्रिका) का प्रकाशन किया, जो बहुत लोकप्रिय हुई। उन्होने नीरोतम प्रकाशन से ही 'तंगागुरूदुन'(पत्रिका) भी प्रकाशित की। जनाब अडियार इस्लाम को एकमात्र मुक्ति मार्ग के रूप में प्रस्तुत करते थे। उन्होंने मद्रास में इस्लामिक दावा सेन्टर कायम किया। वे 6 करोड़ तमिल जनता को इस्लाम का संदेश पहुंचाने के लिए एक इस्लामी टी.वी. चैनल की स्थापना हेतु प्रयासरत रहे। 20 सितम्बर 1996 (जुमा के दिन) को कोडम्बकम में उनकी मृत्यु हो गयी।

दिली सुकून इस्लाम में ही मिलेगा। इस्लाम सच्चा धर्म है। यही वजह है कि मैंने इस्लाम अपनाया।

– ***यूसुफ योहान्ना*** अब ***मुहम्मद यूसुफ***,
पाकिस्तान के मशहूर क्रिकेटर

पाकिस्तान के मशहूर क्रिकेटर यूसुफ योहान्ना ने सितम्बर 2005 में इस्लाम कबूल किया। उन्होंने अपना नाम मुहम्मद यूसुफ रखा। मुहम्मद यूसुफ का कहना है कि उन्होंने इस्लाम अपनाने के ऐलान से तीन साल पहले ही इस्लाम अपना लिया था लेकिन पारिवारिक कारणों के चलते उन्होंने इसका ऐलान नहीं किया था। यूसुफ की बीवी ने भी यूसुफ के साथ ही इस्लाम अपना लिया और अपना नाम तानिया से फातिमा रख लिया।

यहां पेश है मोहम्मद यूसुफ का वेबसाइट www.islam.thetruecall.com को दिया इन्टरव्यू।

इस्लाम मन को पवित्र करता है

आपका बचपन कहां और कैसे गुजरा?

मेरा बचपन कराची की रेलवे कॉलोनी में गुजरा। मुझे बचपन से ही क्रिकेट खेलने का शौक था।

बचपन में धर्म आपके जीवन में क्या अहमियत रखता था। आपने बचपन में अपने धर्म की शिक्षा ली?

मैं बचपन में सण्डे को चर्च जाता था। हालांकि मैं चर्च नियमित नहीं जाता था। समझदार होने के बाद मैं हर सण्डे चर्च जाने लगा था।

आपका इस्लाम की तरफ रुझान कैसे हुआ?

मैं मुस्लिम माहौल के बीच ही पला-बढ़ा। मेरे बचपन के सारे दोस्त मुस्लिम थे और मैं मुस्लिम इलाके में ही रहता था। लेकिन सच्चाई यह है कि मुझे इनका अमल इस्लाम के मुताबिक नजर नहीं आता था। अमल के मामले में वे बाकी लोगों की तरह ही थे, इस वजह से उनका कोई खास असर मुझ पर नहीं हुआ।

आखिर आप में ऐसा बदलाव कैसे आया?

मेरे में अचानक ही बदलाव नहीं आया। जब मैंने तब्लीगी जमात के लोगों का व्यवहार और जिंदगी के प्रति उनका नजरिया देखा तो उनसे बेहद प्रभावित हुआ। हालांकि उन्होंने मुझे कभी यह नहीं कहा कि आप मुसलमान बन जाइए। दरअसल मैं उनसे बेहद प्रभावित हुआ और उनको देखकर ही मैं मुस्लिम हो गया। मैं ही क्या तब्लीगी जमात अमेरिका के कैलीफोर्निया गई हुई थी तो वहां का एक यहूदी इनके अमल से बेहद प्रभावित हुआ और वह मुस्लिम हो गया।

इस्लाम के खिलाफ जबरदस्त दुष्प्रचार के बावजूद लोग इस्लाम कबूल कर रहे हैं।

दरअसल यह हमारा ही कसूर है। हम मुसलमान इसके लिए जिम्मेदार हैं। कहने को पाकिस्तान इस्लामिक देश है लेकिन बाहर से आने वाले व्यक्ति को यहां का माहौल देखकर कतई नहीं लगे कि यहां के लोग इस्लामिक उसूलों को अपनाए हुए हैं। अगर हम पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलेहेवसल्लम की जिंदगी को फोलो करें तो मुसलमानों पर कोई उंगली नहीं उठा सकता।

इस्लाम में आपको ऐसा क्या खास लगा कि आपने ईसाई धर्म छोड़कर इस्लाम अपना लिया?

जिन बाअमल मुसलमानों से प्रभावित होकर मैं मुसलमान बना उनमें मैंने पाया कि इस्लाम जिंदगी गुजारने का एक खास तरीका है। इस्लाम में पीस है,सुकून है,हर एक के साथ अच्छा व्यवहार,लोगों की भलाई की सोच आदि ऐसी बातें हैं जिनसे मैं बेहद प्रभावित हुआ।

पाकिस्तान में अक्सर आंदोलन और विरोध प्रदर्शन होते रहते हैं,आप इसे ठीक मानते है?

हमें शान्ति बनाई रखनी चाहिए। पाकिस्तानी मुसलमानों को शान्तिपूर्वक तरीके से ही कदम उठाने चाहिए। सबसे पहले हमें अपने आपको सुधारना चाहिए। क्या हम वास्तव में इस्लाम के मुताबिक जिंदगी गुजार रहे हैं? जब तक हम खुद सही नहीं होंगे लोग तो हमारा मजाक उड़ाएंगे ही।

आपके लिए यह फैसला लेना कितना मुश्किल था। इस्लाम कबूल करने पर आपके परिवार वालों की किस तरह की प्रतिक्रिया हुई।

परिवार वालों ने मेरे इस फैसले का विरोध किया। मुझे अहसास था मेरे घर वाले मुझसे नाराज होंगे लेकिन सच तो यह है कि दुनिया की कामयाबी ही कामयाबी नहीं है। क्योंकि एक दिन सब को मरना है और अपने कर्मों का हिसाब देना है। दुनिया का सबसे बड़ा सच मौत है और सबसे बड़ा झूठ-जिंदगी।

आपने अपनी पत्नी को मुसलमान होने के बारे में बताया तो उनकी शुरूआती प्रतिक्रिया क्या रही?

मैंने उसको यह नहीं बताया था कि मैं मुसलमान हो गया हूं। मैंने उसको बताया कि आजकल मैं ऐसा कुछ कर रहा हूं जिससे मुझे सुकून हासिल हो रहा है,अच्छा महसूस हो रहा है। तुम भी इस्लामिक तालीम को समझो और तुम्हें अगर यह अच्छी लगती है तो इन बातों को अपना लो। क्योंकि इस्लाम में जबरदस्ती नहीं है। इस्लाम जबरदस्ती से नहीं फैलाया गया है। इस्लाम प्यार से फैला है,भलाई से फैला है। इस्लाम मन को पवित्र करता है जिससे लोग खुद को ईश्वर के करीब महसूस करते हैं।

आपको इस राह पर लाने में सबसे बड़ा हाथ किसका है?

अल्लाह के हुक्म और पैगम्बर के तरीके के मुताबिक जिंदगी गुजारने वालों से मैं बेहद प्रभावित हुआ। ऐसे लोगों की जिंदगी मेरे लिए अनुकरणीय बनी। इनमें से एक है पाकिस्तानी क्रिकेटर सईद अनवर।

पाकिस्तानी क्रिकेट टीम का रुझान भी अब इस्लाम की तरफ देखने को मिलता

है। टीम में यह बदलाव कैसे आया?

मैं काफी समय से टीम में हूं लेकिन पहले मैंने टीम के लोगों में ऐसी अच्छी बातें नहीं पाईं। इस बदलाव का कारण टीम के लोगों का इस्लामिक मूल्यों को अपनी जिंदगी में लागू करना है। सईद अनवर जैसे लोग दुनियाभर में इस्लामिक उसूलों को फैला रहे हैं।

आप उन लोगों को क्या मैसेज देना चाहते हैं जो इस्लाम की हकीकत को जानना चाहते हैं लेकिन किसी दबाव की वजह से घबराते हैं। झिझकते हैं। क्या वास्तव में इस्लाम अपनाना बेहद मुश्किल है?

देखिए मैंने महसूस किया है कि गैर मुस्लिम का मुस्लिम होना इतना मुश्किल नहीं है जितना एक पैदाइशी मुसलमान का इस्लाम के मुताबिक जिंदगी गुजारना। मुसलमानों के बीच इस्लामिक शिक्षा के प्रचार प्रसार की ज्यादा जरूरत है। मैं तो दूसरे धर्म से आया हूं, मुझे पता है दूसरे धर्मों में सुकून और आत्मिक शांति नहीं है। दिली सुकून इस्लाम में ही मिलेगा। इस्लाम सच्चा धर्म है। यही वजह है कि मैंने इस्लाम अपनाया। मेरी तो मुस्लिम भाइयों से यही गुजारिश है कि वे अल्लाह के हुक्म और पैगम्बर मुहम्मद साहब की जिंदगी को अपनाएं।

आप जब ईसाई थे तो मुसलमानों को देखकर क्या महसूस करते थे?

इस्लाम के मुताबिक जिंदगी गुजारने वाले मुसलमानों को देखकर मुझे लगता था कि वास्तव में यह अलग हटकर मजहब है। अल्लाह के हुक्म और पैगम्बर की सुन्नतों के मुताबिक जिंदगी गुजारने वाले लोगों को देखकर ही तो मैं मुस्लिम हुआ हूं। मुझे लगता था सच्चे ईश्वर की तरफ से ही यह मजहब है।

इस्लाम अपनाने के बाद लगा मानो मुझे नई जिंदगी मिली हो। मैंने इस्लाम में उन सभी सवालों के जवाब पाए जिनके जवाब मैं ईसाई धर्म में नहीं खोज पाया था।

– ***जरमैन जैक्शन*** अब ***मुहम्मद अब्दुल अजीज***
अमेरिकन सिंगर और गिटारवादक,
माइकल जैक्शन के बड़े भाई

अमेरिका के मशहूर पॉप सिंगर माइकल जैक्शन के बड़े भाई जरमैन जैक्शन ने 1989 में इस्लाम अपना लिया। इस्लाम कबूल करने के बाद जरमैन जैक्शन का पहली बार इन्टरव्यू लन्दन के अरबी समाचार पत्र अल-मुजल्ला में प्रकाशित हुआ। इस इन्टरव्यू में उन्होंने इस्लाम अपनाने से जुड़े कई सवालों के जवाब दिए। यह उस वक्त का इन्टरव्यू है जब इनके छोटे भाई माइकल जैक्शन मुस्लिम नहीं हुए थे। मैंने यह इन्टरव्यू टर्न टू इस्लाम डॉट कॉम से लिया है और अब आपके सामने पेश है इसका हिन्दी अनुवाद।

दुनिया इस्लाम की सच्चाई को स्वीकारेगी

जरमैन जैक्शन 11 दिसम्बर 1954 को इण्डियाना के ग्रे में पैदा हुए। उनकी पहचान एक अच्छे गायक और गिटारवादक के रूप में है। वे अमेरिकन ग्रेमी अवार्ड के लिए नामांकित हुए। उनके पिता बॉक्सर थे। जरमैन मशहूर अमेरिकन पॉप स्टार माइकल जैक्शन और जेनेट जैक्शन के बड़े भाई हैं। उन्होंने 1973 में हाई स्कूल पास किया। स्कूल दिनों में उन्हें मोस्ट टेलेन्टेड और बेस्ट ड्रेस्ड स्टूडेण्ट का खिताब मिला। जरमैन ने 1989 में इस्लाम धर्म अपना लिया और अपना नाम मुहम्मद अब्दुल अजीज रखा। जरमैन ने अपना कैरियर एक अग्रणी गायक के रूप में शुरू किया था।

इस्लाम की तरफ आपका सफर कब और कैसे शुरू हुआ?

1989 की बात है, जब मैं अपनी बहन के साथ मध्यपूर्वी देशों की यात्रा पर गया था। बहरीन में रुकने पर हमारा गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। मैं वहां कुछ बच्चों से मिला और उनसे हल्की-फुल्की गपशप की। मैंने उनसे कुछ सवाल पूछे और उन मासूम बच्चों ने भी जिज्ञासापूर्वक मेरे से कई बातें पूछी। बातचीत के दौरान उन्होंने मुझसे मेरे धर्म के बारे में सवाल किया। मैंने उन बच्चों को बताया कि मैं ईसाई हूं। जब मैंने उनसे पूछा-आप किस धर्म के हो ? इस सवाल पर उनके चेहरे पर एक खास चमक नजर आई। वे सब एक साथ बोले-इस्लाम। उनके इस उत्साहित उत्तर ने मुझे अन्दर तक हिलाकर रख दिया। फिर वे मुझे इस्लाम के बारे में बताने लगे। उन बच्चों ने अपनी उम्र के मुताबिक टुकड़ों में मुझे इस्लाम से जुड़ी कुछ जानकारी दी। उनके बात करने के अन्दाज से मुझे लगा कि उन्हें इस्लाम पर फख्र है। इस तरह मेरा इस्लाम की तरफ शुरूआती रुख हुआ।

इस्लाम कबूल करने के बाद आपने कैसा महसूस किया?

इस्लाम अपनाने के बाद मुझे लगा मानो मुझे नई जिंदगी मिली हो। मैंने इस्लाम में उन सभी सवालों के जवाब पाए जिनके जवाब मैं ईसाई धर्म में नहीं खोज पाया था। खासतौर पर इस्लाम में ही मुझे ईसा मसीह के जन्म संबंधी सवाल का संतोषप्रद जवाब मिला। मैं पहली बार धर्म के मायने सही तरीके से समझ पाया। मैंने अपने परिवार वालों

से इस्लाम की इन बातों को प्रोत्साहित करने की विनती की। मेरा परिवार ईसाई धर्म के एवेन्डेन्स ऑफ जेहोवा पंथ का अनुयायी है। इस मत के अनुसार सिर्फ 144,000 आदमी ही स्वर्ग में जाएंगे। ऐसे कैसे हो सकता है? मेरे लिए हमेशा यह हैरानी की बात बनी रहती थी। मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि बाइबल कई सारे लोगों ने संकलित की खासतौर पर किंग जेम्स ने अपने हिसाब से बाइबल को संकलित करा कर उसको अधिकृत माना। मुझे आश्चर्य हुआ कि एक आदमी ईश्वरीय ग्रन्थ का संकलन करता है और इसे ईश्वर से जोड़ देता है लेकिन सच्चाई यह है कि इस तरह के संकलन में ईश्वरीय आदेशों की पालना नहीं की गई। सऊदी अरब ठहरने के दौरान मुझे इंग्लैण्ड के पूर्व पॉप स्टार केट स्टीवन्स से मुस्लिम बने यूसुफ इस्लाम की इस्लामिक कैसेट खरीदने का मौका मिला। इन कैसेट्स से मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा।

इस्लाम कबूल करने के बाद अमेरिका लौटने पर किस तरह की प्रतिक्रिया हुई।

अमेरिका लौटने पर अमेरिकी मीडिया ने इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ जमकर जहर उगला। इस तरह की चर्चाओं ने मेरे दिलो दिमाग पर असर डाला। हॉलीवुड भी मुसलमानों की जमकर निंदा करने में लगा था। वे मुसलमानों को आतंकवादी के रूप में पेश करते थे। ईसाईयत और इस्लाम में कई बातों में समानता है जैसे कि पवित्र कुरआन ईसा मसीह को एक पैगम्बर का दर्जा देता है। मुझे आश्चर्य हुआ कि फिर क्यों अमेरिका के ईसाई मुसलमानों पर बेतुके आरोप लगाते हैं।

इस माहौल ने मुझे निराश ही किया। मैंने तय किया कि अमेरिकी मीडिया की इस्लाम और मुसलमानों की बनाई इस गलत इमेज को दूर करने की भरपूर कोशिश करुंगा। मुझे इस बात का अंदाजा नहीं था कि अमेरिकी मीडिया मेरे इस्लाम अपनाने की बात को पचा नहीं पाएगा और इस मुद्दे पर इतना ज्यादा हो हल्ला करेगा। अमेरिकी मीडिया की यह भूमिका अभिव्यक्ति और अंतरात्मा की स्वतंत्रता के लंबे चोड़े खोखले दावों की पोल खोल रही थी। इस तरह अमेरिकी समाज का पाखंड खुलकर मेरे सामने आया।

इस्लाम ने मेरी कई समस्याओं के समाधान सुझाए। मैं खुद को एक अच्छा और पूर्ण इंसान महसूस करने लगा। मुस्लिम होने के बाद मैंने खुद में काफी अच्छे बदलाव महसूस किए। मैंने वे सारी चीजें छोड़ दी जो इस्लाम में मना है। मेरे परिवार के सामने भी मुश्किलें आईं। यूं कहें कि जैक्शन परिवार अंतरद्वंद्व में था। मुझे लिखे गए धमकी भरे पत्रों ने मेरे परिवार को चिंतित किया।

आपको किस तरह की धमकियां दी गईं?

मुझे धमकी दी गई कि इस्लाम अपनाकर मैंने अमेरिकी समाज और सभ्यता से

दुश्मनी पाल ली है। मुझे कहा गया कि मैंने अन्य अमेरिकियों के साथ संबंध बनाए रखने का अधिकार खो दिया है। मुझे धमकाया गया कि वे अमेरिका में मेरा जीना हराम कर देंगे। लेकिन मैं मानता हूं कि मेरा परिवार खुले विचारों वाला है। हम सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। हमारे माता-पिता ने हमें बचपन से ही ऐसा सिखायाा था। यही वजह है कि जैक्शन परिवार सभी धर्मों के लोगों से दोस्ताना संबंध रखता है। उसी परवरिश का नतीजा है कि मैं अब तक यह सब कुछ सहन करता रहा।

आपके भाई माइकल जैक्शन की क्या प्रतिक्रिया हुई?

अमेरिका लौटने पर मैं सऊदी अरब से काफी इस्लामिक किताबें ले आया था। खुद माइकल जैक्शन ने उनमें से कुछ किताबें अध्ययन के लिए मेरे से मांगी। इससे पहले मुसलमानों को लेकर उसका नजरिया भी अमेरिकी मीडिया का इस्लाम के खिलाफ दुष्प्रचार से प्रभावित था। वह न तो इस्लाम का विरोधी था और ना ही मुसलमानों का पक्षधर। लेकिन ये किताबें पढ़ने के बाद तो वह मुसलमानों के खिलाफ कुछ भी नहीं बोलता था। इस्लाम के अध्ययन का ही नतीजा था कि माइकल मुस्लिम बिजनेसमेनों में दिलचस्पी लेने लगा। फिर तो वह सऊदी अरबपति राजकुमार वलीद बिन तालल की बहुराष्ट्रीय कम्पनी में साझीदार भी बना।

पहले यह कहा गया कि माइकल जैक्शन मुसलमानों का विरोधी है। लेकिन अब चर्चा है कि माइकल भी मुसलमान हो गया है। आखिर सच्चाई क्या है?

मुझे अच्छी तरह याद है कि माइकल ने कभी भी मुसलमानों के खिलाफ अपमानजनक शब्द नहीं बोले। उसके तो गाने भी सबसे प्रेम करने का संदेश देते हैं। हमने तो अपने माता-पिता से सभी से प्रेम करना सीखा है । कुछ लोग उस पर मनगढन्त आरोप लगा रहे हैं। जब मैं मुस्लिम हुआ था तो मेरे खिलाफ भी तो जमकर माहौल बनाया गया था। माइकल को भी ऐसे ही बदनाम किया गया है। हालांकि इस्लाम से नजदीकी बढ़ाने पर माइकल जैक्शन की आलोचना और उसको मिली धमकियों को मीडिया गोल कर गया। लेकिन कौन जानता है तब क्या होगा जब माइकल जैक्शन इस्लाम अपना लेगा।

आपके धर्म परिवर्तन पर परिवार के बाकी लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी?

मेरे अमेरिका लौटने से पहले ही मेरी मां जान चुकी थी कि मैं मुसलमान हो गया हूं। मेरी मां धार्मिक और सभ्य महिला है। उसने मेरे से सिर्फ एक ही सवाल पूछा-तुमने मुसलमान होने का फैसला अचानक लिया है या फिर गहन अध्ययन और चिंतन के बाद? मैंने जवाब दिया-अच्छी तरह चिन्तन और मनन करके ही मैंने यह निर्णय लिया है। हमारा परिवार आस्थावान परिवार के रूप में जाना जाता है। जो कुछ भी आज हम हैं

ईश्वर की अनुकम्पा से ही हैं फिर भला ईश्वर के प्रति हमारा समर्पण क्यों न हो? इसी वजह से तो हम जनकल्याणकारी संस्थाओं के जरिए सक्रिय रूप से जनकल्याण में जुटे रहते हैं। हमने गरीब अफ्रीकी देशों के लिए विशेष एयरक्राफ्ट से दवा भिजवाई। बोस्निया युद्ध के दौरान हमने अपने एयरक्राफ्ट के जरिए पीड़ितों की मदद की। हम इस तरह के कामों को लेकर संवेदनशील रहते हैं क्योंकि हमने भी गरीबी को झेला है। हम ऐसे घर में रहते थे जो मुश्किल से कुछ स्क्वायर मीटर ही था।

क्या आपने अपनी पॉप स्टार बहन जेनेट जेक्शन से इस्लाम के संबंध में चर्चा की थी?

मेरे धर्म परिवर्तन करने से परिवार के अन्य सदस्यों की तरह मेरी बहन को भी आश्चर्य हुआ। शुरू में तो वह बेहद चिंतित हुई। उसके दिमाग में तो एक ही बात बैठी हुई थी कि मुसलमान कई विवाह करते हैं। जब मैंने उसको अमेरिकी समाज के सन्दर्भ के साथ यह बात बताई कि इस्लाम किन हालात में दूसरे विवाह की इजाजत देता है तो वह जवाब से सन्तुष्ट थी। हकीकत यही है कि पश्चिमी समाज में बेहयाई और बेवफाई आम है। पाश्चात्य देशों में शादीशुदा होने के बावजूद पुरुषों के कई अन्य महिलाओं से शारीरिक संबंध होते हैं। पश्चिमी समाज के नैतिक पतन का यह एक प्रमुख कारण है जबकि इस्लाम इस नैतिक पतन से समाज को बचाए रखने के उपाय सुझाता है। इस्लाम के मुताबिक अगर कोई शख्स किसी महिला की तरफ आकर्षित होता है तो उसके लिए जरूरी है कि वह इस रिश्ते को सम्मानजनक तरीके से निभाए और इसे कानूनी जामा पहनाए। अगर वह ऐसा नहीं कर पाता है तो वह अपनी एक पत्नी के साथ ही निर्वाह करे। दूसरी तरफ यह भी सच्चाई है कि इस्लाम दूसरी शादी पर इतनी शर्तें लगा देता है कि एक आम मुस्लिम के लिए आर्थिक रूप से इनको निभा पाना मुश्किल है। मुस्लिम दुनिया में मुश्किल से एक फीसदी लोग होंगे जिनके एक से अधिक पत्नियां हैं। मेरा मानना है कि इस्लामिक समाज में महिलाएं उस सुगन्धित फूल की तरह है जो घूरने वाली वासनायुक्त निगाह से पूरी तरह से सुरक्षित हैं। दूसरी तरफ पश्चिमी समाज ऐसी सोच से पूरी तरह खाली है। पश्चिम को इस तरह के ज्ञान और दर्शन की सराहना करनी चाहिए।

मुस्लिम सोसाइटी को देखने पर आपको कैसा महसूस हुआ?

मुझे इसमें मानवता के व्यापक हित नजर आए। मेरा मानना है कि इस्लामिक सोसाइटी इस ग्रह की सबसे सुरक्षित जगह है। महिलाओं का ही उदाहरण लीजिए। अमेरिकी महिलाएं इस तरह के परिधान पहनती हैं जो पुरुषों को उनके उत्पीड़न का आमत्रंण देते हैं। जबकि इस्लामिक समाज में ऐसा बिल्कुल भी देखने को नहीं मिलेगा।

दूसरी तरफ विभिन्न तरह के बिगाड़ों से पश्चिमी समाज का नैतिक पतन हो चुका है। मेरा मानना है कि अगर इंसानियत कहीं बची है तो सिर्फ इस्लामिक सोसाइटी में। समय आएगा जब पूरी दुनिया इस सच्चाई को स्वीकार करेगी।

अमेरिकी मीडिया के बारे में आपका नजरिया क्या है?

अमेरिकी मीडिया अन्तर्विरोधों से भरा पड़ा है। हॉलीवुड का उदाहरण लीजिए,जहां आर्टिस्ट का स्तर उसकी गाड़ी के मॉडल और जिस रेस्टोरेंट में वह जाता है,उससे आंका जाता है। मीडिया ही है जो किसी को जमीन से उठाकर आसमान पर बिठा देता है। वह नहीं सोचता कि आर्टिस्ट भी आखिर इंसान ही होते हैं। मैं मध्यपूर्वी देशों के कई आर्टिस्टों से मिला जिनमें ना कोई घमण्ड था और ना ही किसी तरह की गलतफहमी।

सीएनएन टीवी चैनल देखते वक्त कुछ छोटी खबरों की बड़ी प्रस्तुति से लगता है मानो दुनिया में इनके अलावा कुछ घटित ही ना हुआ हो। फ्लोरिडा के जंगलों में लगी आग की खबर को देखकर तो ऐसा लगा मानो पूरी पृथ्वी ही आग की चपेट में आ गई हो,जबकि सच्चाई यह थी कि यह एक छोटा सा इलाका था जो आग की चपेट में आ गया था।

ओखामा शहर में जब बम ब्लास्ट हुए उस वक्त मैं अफ्रीका में था। बिना किसी सबूत के मीडिया इसमें मुस्लिमों के हाथ होने के खबरें देने लगा। जांच-पड़ताल होने पर इस बम ब्लास्ट का दोषी एक ईसाई निकला। इससे हम अमेरिकी मीडिया की सोच को समझ सकते हैं।

अमेरिकन मीडिया ने तो सऊदी अरब को भी नहीं छोड़ा और उसके बारे में अजीब तरह की खबरें फैलाता रहता है। जब मैं पहली बार सऊदी अरब गया तो मेरा मानना था कि वहां के मकान ऐसे ही होंगे और वहां का कम्यूनिकेशन नेटवर्क भी कमजोर होगा। लेकिन जब मैं वहां पहुंचा तो हैरान रह गया। मुझे यह दुनिया का सभ्य और खूबसूरत मुल्क लगा।

क्या आप अपने इस्लामिक व्यक्तित्व और फैमिली कल्चर के बीच तालमेल बिठा लेते हैं?

क्यों नहीं। अच्छी बातों और उपलब्धियों के बीच तालमेल बनाए रखा जा सकता है।

इस्लाम अपनाने के बाद क्या आप मशहूर बॉक्सर मुहम्मद अली से मिले?

मुहम्मद अली हमारे पारिवारिक मित्र हैं। मुसलमान होने के बाद मैं उनसे कई बार मिला। वे इस्लाम से संबंधित मुझे अच्छी बातें बताते रहते हैं।

क्या आपने लॉस एन्जिल्स शहर की शाह फैसल मस्जिद देखी?

हां,वास्तव में यह एक खूबसूरत मस्जिद है। मैं भी ऐसी ही एक खूबसूरत मस्जिद फालिस इलाके में बनवाना चाहता हूं। क्योंकि इस इलाके में मस्जिद नहीं है और यहां के मुस्लिम आर्थिकि रूप से सक्षम नहीं है कि इस पॉश इलाके में मस्जिद के लिए जमीन खरीद सके। अल्लाह ने चाहा तो मैं यह काम करूंगा।

इस्लाम के मामले में आप किससे ज्यादा प्रभावित हुए?

मैं कई लोगों से प्रभावित हुआ लेकिन सच्चाई यह है कि सबसे पहले मैंने कुरआन का अध्ययन किया क्योंकि मैं इस रास्ते में आधी-अधूरी जानकारी रखकर किसी तरह का जौखिम नहीं उठाना चाहता था। हालांकि कई ऐसे इस्लामिक उलमा है जिन पर फख्र किया जा सकता है। अल्लाह को मंजूर हुआ तो मेरा इरादा अपने परिवार के साथ उमरा के लिए सऊदी अरब जाने का है।

क्या आपकी पत्नी और बच्चे भी मुसलमान हैं?

मेरे सात बेटे और दो बेटियां हैं जो मेरी तरह ही मुस्लिम हैं। मेरी पत्नी अभी इस्लाम का अध्ययन कर रही है। वह सऊदी अरब जाने के लिए जोर देती है। मुझे भरोसा है कि इन्शा अल्लाह वह भी जल्दी इस्लाम अपना लेगी। सर्वशक्तिमान ईश्वर से दुआ है कि वह हमें इस सच्चे धर्म पर जमे रहने का साहस और सब्र दे। **आमीन**

इस्लाम कबूल करने से पहले मैं किसी भी मुसलमान से नहीं मिला था। मैंने पहले कुरआन पढ़ा और जाना कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है जबकि इस्लाम हर मामले में पूर्णता लिए हुए है।

– ***केट स्टीवन्स*** *अब* –***यूसुफ इस्लाम***

इंग्लैण्ड के माने हुए पॉप स्टार रहे।

इस्लाम कबूल करने की दास्तां
खुद यूसुफ इस्लाम
की जुबान से जानिए।

कुरआन में मिला मेरे हर सवाल का जवाब

मैं आधुनिक रहन सहन ,सुख-सुविधाओं और एशो आराम के साथ पला बढ़ा। मैं एक ईसाई परिवार में पैदा हुआ। हम जानते हैं कि हर बच्चा कुदरती रूप से एक खास फितरत और और स्वभाव के साथ पैदा होता , लेकिन उसके माता- पिता उसको इधर उधर के धर्मों की तरफ मोड़ देते हैं। ईसाई धर्म में मुझे पढ़ाया गया कि ईश्वर से सीधा ताल्लुक नहीं जोड़ा जा सकता। ईसा मसीह के जरिए ही उस ईश्वर से जुड़ा जा सकता है। यही सत्य है कि ईसा मसीह ईश्वर तक पहुंचने का दरवाजा है। मैंने इस बात को थोड़ा बहुत स्वीकार किया,लेकिन मैं इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं था। जब मैं मसीह की मूर्तियां देखता तो सोचता यह तो पत्थर मात्र है। इनमें कोई प्राण नहीं। लेकिन जब मैं सुनता कि यही ईश्वर है तो मैं उलझन में फंस जाता और आगे कोई सवाल भी नहीं कर पाता। मैं कमोबेश रूप में ईसाई विचारधारा को मानता था क्योंकि यह मेरे माता-पिता का धर्म था जिसका सम्मान मुझे करना था।

मैं धीरे-धीरे ईसाई मत से दूर होता गया और संगीत के क्षेत्र में आ गया। मैंने म्यूजिक बनाना शुरू कर दिया। मेरी ख्वाहिश एक बड़ा स्टार बनने की थी। फिल्मों और मीडिया के इर्द-गिर्द जो दुनिया मैंने देखी उसे देख मुझे लगा कि मेरा ईश्वर तो यही सबकुछ है। अब मेरा मकसद ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना था।

मेरे एक अंकल थे जिनके पास काफी पैसा था और एक शानदार गाड़ी थी। उनको देखकर भी मुझे लगा कि ये सारे ऐशो आराम ही जिन्दगी का मकसद है। अपने आसपास के लोगों को देखकर मुझे महसूस होता कि यह दुनिया ही उनके लिए ईश्वर है। फिर मैंने भी तय कर लिया कि मेरे जीवन का मकसद भी पैसा कमाना ही है ताकि मैं ऐशो आराम की जिंदगी जी सकूं । अब मेरे आदर्श पॉप स्टार्स बन गए थे। मैं म्यूजिक बनाने लगा लेकिन मेरे दिल के एक कोने में इन्सानी हमदर्दी का भाव छिपा था। सोचता था कि मेरे पास बहुत पैसा हुआ तो मैं जरूरतमंदों की मदद करूंगा। धीरे-धीरे मैं पॉप स्टार के रूप में मशहूर होने लगा। अभी मैं किशोर अवस्था ही में था कि फोटो सहित मेरा नाम मीडिया में छाने लगा। मीडिया ने मुझे उम्र से ज्यादा शोहरत दी। मैं जिन्दगी को भरपूर

तरीके से जीना चाहता था। ऐशो आराम की जिन्दगी के चलते मैं नशे का आदी हो गया।

शानदार कामयाबी और हाई-फाई रहन सहन का अभी लगभग एक साल ही गुजरा होगा कि मैं बहुत ज्यादा बीमार हो गया। मुझे टीबी हो गई और अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। अस्पताल में बीमारी के दौरान मैं फिर से चिंतन करने लगा-मेरे साथ यह क्या हुआ? क्या मैं सिर्फ शरीर मात्र हूं? ख्वाहिशात के वशीभूत होकर जिन्दगी गुजारना ही क्या मेरी जिन्दगी का मकसद है?

मैं अब महसूस करता हूं कि मेरा यह चिंतन अल्लाह की दी हुई हिदायत और रहमत थी जो मेरी आंखें खोलना चाहती थीं। अस्पताल में मैं खुद से सवाल करता-मैं यहां क्यों आया हूं? मैं बिस्तर पर क्यों पड़ा हूं? मैं इनके जवाब तलाशने लगा। इस समय पूर्वी देशों के रहस्यवाद में कई लोगों की दिलचस्पी थी। मैं भी रुचि लेने लगा। पहली चीज जिसको लेकर मैं जागरूक हुआ,वह थी मौत। मैंने और गौर फिक्र करना शुरू कर दिया और मैं शाकाहारी बन गया। यह सारा चिंतन मैंने अस्पताल में ही किया।

तबियत ठीक होने के बाद की बात है। एक दिन जब मैं टहल रहा था तो अचानक बारिश शुरू हो गई और मैं भीग गया। मैं भागकर एक छत के नीचे खड़ा हो गया। उस वक्त मुझे एहसास हुआ मानो मेरा बदन मुझसे कह रहा है-मैं भीग रहा हूं। मुझे लगा मानो मेरा बदन गधे की तरह है जो मुझे जहां उसकी इच्छा हो रही है उधर खींच रहा है। मुझे महसूस हुआ जैसे यह विचार मेरे लिए ईश्वर का उपहार है,जिसने मुझे उसकी इच्छा का अनुसरण करने का एहसास कराया। इस बीच मेरा पूर्वी धर्मों की तरफ झुकाव हुआ। यहां मुझे धर्मों की नई परिभाषा देखने को मिली। दरअसल मैं ईसाइयत से ऊब चुका था। मैंने फिर से म्यूजिक बनाना शुरू कर दिया लेकिन इस बार मेरे संगीत में गहरा आध्यात्मिक पुट था। इस संगीत में रूहानियत थी और साथ में ईश्वर,स्वर्ग और नरक का जिक्र भी। मैंने-*द वे टू फाइंड आउट गॉड* गीत भी लिखा। अब तो मैं संगीत की दुनिया में और ज्यादा मशहूर हो गया। दरअसल उस वक्त मैं मुश्किल दौर में था,क्योंकि मुझे पैसा और नाम मिलता जा रहा था जबकि मैं उस वक्त सच्चे ईश्वरीय रास्ते की तलाश में जुटा था। इस बीच मैं इस फैसले पर पहुंचा कि बौद्ध धर्म उच्च और सच्चा धर्म है। लेकिन मेरी परेशानी यह थी कि बौद्ध धर्म से जुड़ने के लिए मैं दुनियावी ऐशो आराम छोड़ने के लिए तैयार न था। दुनिया को छोड़कर संन्यासी बनना मेरे लिए मुश्किल था। इस बीच मैंने अंक विद्या,चिंग,टेरो कार्ड और ज्योतिष को खंगालने की कोशिश की। मैंने फिर से बाइबल का अध्ययन किया लेकिन मेरी सच जानने की प्यास नहीं बुझी। इस वक्त तक मैं इस्लाम के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। इस बीच एक अच्छी घटना घटी। मेरा भाई जब यरुशलम की मस्जिद में गया तो वहां मुसलमानों का खुदा के प्रति भरोसा,इबादत का तरीका और सुकूनभरे माहौल को देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ। वह जब यरुशलम

से लौटा तो मेरे लिए कुरआन का एक अंग्रेजी अनुवाद लेकर आया। हालांकि मेरा भाई मुसलमान नहीं हुआ था, लेकिन उसे इस्लाम में कुछ खास होने का एहसास हुआ और उसे लगा कि इससे मुझे कुछ अच्छा हासिल होगा।

मैंने कुरआन पढ़ना शुरू किया तो मुझे एक नई राह मिली। ऐसी राह जिसमें मुझे मेरे सारे सवालों के जवाब मिल गए। मैं कौन हूं? मेरी जिन्दगी का मकसद क्या है? सच्चा मार्ग कौनसा है? मैं कहां से आया हूं और मुझे कहां जाना है? इन सारे सवालों के जवाब मैंने कुरआन में पाए। अब मुझे एहसास हो गया कि सच्चा धर्म तो इस्लाम है। यह ऐसा नहीं है जैसा पश्चिमी देशों में धर्म को लेकर अवधारणा है,जो सिर्फ बुढ़ापे के लिए माना जाता है।

पश्चिमी देशों में धर्म को जीवन में लागू करने वाले व्यक्ति को धर्मांध माना जाता है। मैं पहले शरीर और आत्मा को लेकर गलतफहमी में था। अब मैंने महसूस किया कि शरीर और आत्मा एक -दूसरे से जुड़े हुए हैं। ईश्वर की इबादत के लिए पहाड़ों पर जाकर साधना करने की जरूरत नहीं है। हम रब की रजा हासिल करके फरिश्तों से भी ऊंचा मुकाम हासिल कर सकते हैं। यह सब कुछ जानने के बाद अब मेरी इच्छा जल्दी मुसलमान बनने की थी। मुझे महसूस हुआ कि हर एक चीज का जुड़ाव सर्वशक्तिमान ईश्वर से है और जो शख्स गाफिल है,वह ईश्वरीय राह नहीं पा सकता। ईश्वर ही तो है सब चीजों का पैदा करने वाला।

अब मुझमें घमण्ड कम होने लगा क्योंकि पहले मैं इस गलतफहमी में था कि मैं जो कुछ हूं अपनी मेहनत के बलबूते पर हूं। लेकिन अब मुझे एहसास हो गया था कि मैं खुद को बनाने वाला नहीं हूं और मेरी जिन्दगी का मकसद है कि मैं अपनी इच्छा सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने समर्पित कर दूं। ईश्वर के प्रति मेरा भरोसा मजबूत होता गया। मुझे लगा कि जिस तरह का मेरा यकीन है,उसके मुताबिक तो मैं मुस्लिम हूं। कुरआन पढ़कर मैंने जाना कि सभी पैगम्बर एक ही मैसेज और सच्चा मार्ग लेकर आए थे। फिर क्यों ईसाई और यहूदियों ने खुद को अलग-थलग कर लिया? मैं जान गया था कि यहूदी क्यों ईसा अलैहिस्सलाम को नहीं मानते और क्यों उन्होंने उनके पैगाम को बदल डाला। ईसाई भी खुदा के कलाम को गलत समझ बैठे और उन्होंने ईसा को खुदा बना डाला। यह कुरआन ही की खूबी है कि वह इंसान को गौर और फिक्र करने की दावत देता है और चाँद और सूरज को पूजने के बजाय सबको पैदा करने वाले सर्वशक्तिमान ईश्वर की इबादत के लिए उभारता है। कुरआन लोगों से सूरज,चाँद और खुदा की बनाई हुई हर चीज पर सोच-विचार करने पर जोर देता है। बहुत से अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी के पार जाकर और विशालकाय अंतरिक्ष को देखकर अधिक आस्थावान हो गए क्योंकि उन्होने अल्लाह की यह खाास निशानियां देखीं।

फिर जब मैंने कुरआन में आगे नमाज,जकात और अल्लाह के रहमो करम के बारे में पढ़ा तो मैं समझ चुका था कि कुरआन में मेरे हर एक सवाल का जवाब है और यह ईश्वर की तरफ से मेरे लिए गाइडेंस है। हालांकि मैं अभी तक मुसलमान नहीं हुआ था। मैं कुरआन की आयतों का बारीकी से अध्ययन करने लगा। कुरआन कहता है-***ऐ ईमान वालो, अल्लाह से बगावत करने वालों को दोस्त मत बनाओ और ईमान वाले आपस में सब भाई हैं।***

यह आयत पढ़कर मैंने सोचा कि मुझे अपने मुस्लिम भाइयों से मिलना चाहिए।

अब मैंने यरूशलम का सफर करने का इरादा किया। यरूशलम पहुंचकर मैं वहां की एक मस्जिद में जाकर बैठ गया। एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा-तुम यहां क्यों बैठे हो,क्या तुम्हें कोई काम है? नाम पूछने पर जब मैंने अपना नाम स्टीवन्स बताया तो वह कुछ समझ नहीं पाया। फिर मैं नमाज में शामिल हुआ हालांकि मैं सही तरीके से नमाज नहीं पढ़ पाया। मैं लंदन लौट आया। मैं यहां सिस्टर नफीसा से मिला और उनको बताया कि मैं इस्लाम ग्रहण करना चाहता हूं। सिस्टर नफीसा ने मुझे न्यू रिजेंट मस्जिद जाने का मशविरा दिया।

यह 1977 की बात है और कुरआन का अध्ययन करते मुझे डेढ़ साल हो गया था। मैं मन बना चुका था कि अब मुझे अपनी और शैतान की ख्वाहिशें छोड़कर सच्ची राह अपना लेनी चाहिए। मैं जुमे की नमाज के बाद मस्जिद के इमाम के पास पहुंचा। हक को मंजूर कर लिया और इस्लाम का कलिमा पढ़ लिया। अब मुझे लगा मैं खुदा से सीधा जुड़ गया हूं।

ईसाई और अन्य धर्मावलम्बियों की तरह किसी जरिए से नहीं बल्कि सीधा। जैसा कि एक हिन्दू महिला ने मुझसे कहा-तुम हिन्दुओं के बारे में नहीं जानते,हम एक ईश्वर में आस्था रखते हैं। हम तो उस ईश्वर में ध्यान लगाने के लिए मूर्तियों को माध्यम बनाते हैं। मुझे लगा क्या ईश्वर तक पहुंचने के लिए ऐसे साधनों की जरूरत है? लेकिन इस्लाम तो बन्दे और खुदा के बीच के ये सारे माध्यम और परदे हटा देता है।

मैं बताना चाहूंगा कि मेरा हर अमल अल्लाह की खुशी के लिए होता है।

मैं दुआ करता हूं कि मेरे अनुभवों से सबको सबक मिले। मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि इस्लाम कबूल करने से पहले मैं किसी भी मुसलमान से नहीं मिला था। मैंने पहले कुरआन पढ़ा और जाना कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है जबकि इस्लाम हर मामले में पूर्णता लिए हुए है। अगर हम पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहेवसल्लम के बताए रास्ते पर चलेंगे तो कामयाब होंगे। अल्लाह हमें पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहेवसल्लम के बताए रास्ते पर चलने की हिदायत दें। **आमीन**

कुरआन ने सीधा, सहज और असर अंदाज तरीके से निराकार और एक ईश्वर की अवधारणा को बेहतर ढंग से पेश किया। ईश्वर का यही रूप आधुनिक सोच के अनुरूप भी है।

-डॉ मुराद हॉफमेन

जर्मनी के पूर्व राजदूत और नाटो के सूचना निदेशक

जर्मन के डॉ विलफ्राइड हॉफमेन ने 1980 में जब इस्लाम कबूल किया तो जर्मनी में हलचल मच गई। उनके इस फैसले का बड़े पैमाने पर विरोध हुआ। उन्होंने अपना नाम मुराद हॉफमेन रखा। जर्मनी के दूत और नाटो के सूचना निदेशक रह चुके डॉ मुराद हॉफमेन ने इस्लाम पर कई किताबें लिखी हैं।

कुरआन से मैं बेहद प्रभावित हुआ

1980 में इस्लाम ग्रहण करने वाले डॉ हॉफमेन 1931 में जर्मनी कैथोलिक ईसाई परिवार में पैदा हुए। उन्होंने न्यूयॉर्क के यूनियन कॉलेज से ग्रेजुएशन किया और म्यूनिख यूनिवर्सिटी से कानूनी शिक्षा हासिल की। 1957 में धर्मशास्त्र में डॉक्टरेट की। 1960 में हार्वर्ड लॉ स्कूल से उन्होंने एलएलएम की डिग्री हासिल की। 1983 से 1987 तक ब्रूसेल्स में उन्होंने नाटो के सूचना निदेशक के रूप में काम किया। वे 1987 में अल्जीरिया में जर्मनी के दूत बने और फिर 1990 में मोरक्को में चार साल तक जर्मन एम्बेसेडर के रूप में काम किया। उन्होंने 1982 में उमरा और 1992 में हज किया।

विभिन्न तरह के अनुभवों ने डॉ हॉफमेन को इस्लाम की ओर अग्रसर किया। जब वे 1961 में अल्जीरिया में जर्मनी दूतावास में नियुक्त थे तो उन्होंने फ्रांस की फौजी टुकडियों और अल्जीरियन नेशनल फ्रंट के बीच नजदीकी से गुरिल्ला जंग देखी। अल्जीरियन नेशनल फ्रन्ट पिछले आठ सालों से अपनी आजादी के लिए जूझ रहा था। अल्जीरियन पर फ्रांसिसियों का अत्याचार और अल्जीरियन का सहनशील होकर डटे रहने को उन्होंने नजदीकी से देखा। रोजाना दर्जनों अल्जीरियन मारे जाते थे,सिर्फ इसलिए कि वे अपना मुल्क आजाद कराना चाहते थे। वे कहते हैं,'मैं बेहद हैरान था अल्जीरियन लोगों की हिम्मत और सब्र देखकर। वे धैर्य के साथ इस बड़ी मुसीबत का सामना कर रहे थे। रमजान महीने के दौरान खुद को पाक करना और सब्र ,जीत के प्रति उनका भरोसा और हौसला। गरीबी के बावजूद उनका इंसानियत के प्रति जज्बा। यह सब देख मुझे लगा कि उनके धर्म ने ही उनको ऐसे मजबूत आस्था का मालिक बनाया है।'

मुसलमानों के इन अमल को नजदीकी से देखने के बाद डॉ हॉफमेन ने इस्लाम की किताबों का अध्ययन शुरू कर दिया। वे कहते हैं, 'कुरआन पढ़ना मैंने तब से शुरू किया और फिर कभी पढना बंद नहीं किया।'

इस्लामिक आर्ट ने भी डॉ हॉफमेन को बेहद प्रभावित किया। वे कहते हैं,'खूबसूरत लेखनी, स्पेस फिलिंग,मकानों और मस्जिदों की स्थापत्य कला देखते ही बनती है। मस्जिदों में कंधे से कंधा मिलाकर एक सीध में नमाज अदा करते मुसलमान भाईचारे और लोकतंत्र की मिसाल होते हैं।'

पुराने इस्लामिक अरबन सेन्टर्स का मुस्लिम समाज के प्रति दायित्व व कामकाज,मुसलमानों के बाजार और खरीद फरोख्त में ईमानदारी,मस्जिदों में इबादत के दौरान दिखने वाली एकता व भाईचारा और मस्जिदों से जुड़े समाजसेवी केन्द्र जो गरीबों के उत्थान में जुटे हैं,मदरसे आदि को करीब से देखना डॉ हॉफमेन के लिए खास और अलग तरह का अनुभव था। इस्लामिक भाईचारे और इस्लाम में जिंदगी गुजारने के तरीके को देखकर वे बेहद प्रभावित हुए।

इन सब बातों के अलावा डॉ हॉफमेन पर ईसाइयत का इतिहास और ईसाई मत संबंधी उनकी जानकारी और ज्ञान ने भी खासा असर छोड़ा। उन्हें महसूस हुआ कि ईसाईयों की आस्था और विश्वास तथा जो कुछ इतिहास के प्रोफेसर ईसाइयत के बारे में पढाते हैं, दोनों के बीच बहुत बडा अंतर है। वे दुखी थे और उन्हें अफसोस था कि गिरिजाघरों ने भी मसीह और ईसाई मत के उस रूप को ग्रहण किया है जो संत पॉल ने स्थापित किया। संत पॉल जो मसीह से कभी नहीं मिला, उसने मूल और असली यहूदी-ईसाई मत की जगह ईसाइयत को एक अलग ही जामा पहना दिया।

डॉ हॉफमेन के ईसाइयत की यह अवधारणा गले नहीं उतर पाई कि इंसान पैदाइशी गुनाहगार है और ईश्वर को इंसानों के गुनाहों के बदले अपने ही बेटे को सूली पर चढ़वाकर कुरबानी लेनी पड़ी। 'मेरे यह पच नहीं पा रहा था कि आदम और हव्वा के गुनाह से इंसान को बेदाग करने के लिए क्या ईश्वर के पास मसीह की बलि लेना ही एकमात्र उपाय था! उस ईश्वर के पास जिसने आदम और हव्वा को बिना मां-बाप के पैदा किया था।

डॉ हॉफमेन फिर मूल सवाल ईश्वर की उपस्थिति की ओर लौटे। उन्होंने गौर व फिक्र करना शुरू किया कि क्या ईश्वर है! कई पाश्चात्य दार्शनिकों को पढने के बाद वे ईश्वर की उपस्थिति को स्वीकारने लगे। अब उनके सामने सवाल खड़ा हुआ आखिर ईश्वर इंसानों को गाइड कैसे करता हैं! इस बिन्दू पर गौर करने के बाद उन्हें यकीन हुआ कि ईश्वर पैगम्बर और किताबों के जरिए अपने आदेश जारी करता है। फिर उनके जहन में सवाल उठा- आखिर ईश्वर का सच्चा संदेश किसमें है! यहूदी-ईसाई धर्मग्रंथों में या फिर इस्लाम में!

डॉ हॉफमेन को कुरआन में इसका सटीक जवाब मिला। कुरआन अध्ययन के दौरान यह आयत पढ़कर उनकी आंखें खुल गईं-

कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा

वे इस बात से सहमत हुए कि आदम और हव्वा के गुनाह के कारण इंसान पैदाइशी गुनाहगार नहीं बल्कि हर एक को अपने गुनाह का जवाब देना है। उन्होंने जाना कि एक मुसलमान बिना पादरियों और मौलवियों के ईश्वर से सीधा ताल्लुक रखता है। वह ईश्वर

की सीधी इबादत करता है बिना किसी मध्यस्थों के जबकि ईसाई लोग पादरियों की शरण में जाकर ईश्वर को हासिल करना चाहते हैं। डॉ हॉफमेन कहते हैं–

'मैंने इस्लाम का उसकी भावना और उसकी रूह के हिसाब से अध्ययन करना शुरू किया। फिर तो मेरा पक्का विश्वास हो गया कि गॉड सिर्फ एक ही है और वही सच्चा गॉड है। वह ऐसा सुपर पावर है जिसका न आदि है,न अंत और न उसका कोई शरीक है। ईसाई मत के मुताबिक गॉड के तीन हिस्सों में बंटे होने की तुलना में कुरआन ने सीधा,सहज और असर अंदाज तरीके से निराकार और एक ईश्वर की अवधारणा को बेहतर ढंग से पेश किया। ईश्वर का यही रूप आधुनिक सोच के अनुरूप भी है। कुरआन में छिपे दार्शनिक तत्व और नैतिक शिक्षाओं ने मुझे बेहद प्रभावित किया और ये मुझे सोने के समान खरी नजर आईं। कुरआन की आयतों को देखकर मुझे यकीन हो गया कि पैगंबर और उनके मिशन पर किसी तरह का शक नहीं किया जा सकता।'

1980 में अपने पुत्र के 18वें जन्मदिन के मौके पर डॉ हॉफमेन ने 12 पेजों का एक नोट लिखा। इस हस्तलिखित नोट में उन्होंने कई दार्शनिक पहलुओं को टच किया था। ये वे दार्शनिक पहलू थे जिनके जवाब डॉ हॉफमेन जान चुके थे। उन्होंने अपनी यह नोट बुक एक मुस्लिम इमाम मुहम्मद अहमद रसूल को दिखाई। नोट बुक देखने के बाद इमाम मुहम्मद अहमद रसूल ने कहा कि जो कुछ उन्होंने इस नोट बुक में लिखा है, अगर वे उस पर यकीन करते हैं तो वे मुसलमान हैं यानी वे इस्लामी उसूलों पर भरोसा करने लगे हैं। और फिर कुछ दिनों बाद 25 सितंबर 1980 को उन्होंने इस्लाम का कलिमा पढ़ लिया–
' मैं गवाही देता हूं कि सिवाय अल्लाह के कोई इबादत के लायक नहीं और मुहम्मद सलल्लाहो अलेहेवसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।'

इस्लाम कबूल करने के पन्द्रह साल बाद तक डॉ हॉफमेन जर्मनी के दूत और नाटो के अधिकारी की हैसियत से काम करते रहे। वे कहते हैं–'इस्लाम कबूल करने के बाद मेरी प्रोफेशनल लाइफ में मुझे किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। इस्लाम अपनाने के साढ़े तीन साल बाद 1984 में जर्मनी के प्रेसीडेंट डॉ कॉर्ल कारस्टेन्स ने मुझे 'ऑर्डर ऑफ मेरिट ऑफ दी फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी' सम्मान से नवाजा। यही नहीं जर्मन सरकार ने मेरे द्वारा लिखी किताब 'डायरी ऑफ ए जर्मन मुस्लिम' को मुस्लिम देशों और वहां स्थित जर्मन दूतावासों में खोजपरक किताब के रूप में पेश किया।'

शराब के शौकीन रहे डॉ हॉफमेन ने इस्लाम कबूल करने के बाद शराब छोड़ दी। इस्लाम की खातिर कुछ करने के मकसद से सन् 1995 में उन्होंने एच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। शराब को बुराई की जड़ मानने वाले डॉ हॉफमेन अपने से जुड़ा एक हादसा बताते हैं–
'1951 की बात है। मैं न्यूयॉर्क में कॉलेज में पढ़ता था। एक दिन मैं अटलांटा से मिसिसिप्पी जा रहा था कि सामने से आ रही एक गाड़ी ने मेरी कार को टक्कर मार दी।

सामने वाली गाड़ी का चालक नशे में था। यह खतरनाक हादसा था जिसमें मेरे 19 दांत टूट गए और चेहरा जख्मी हो गया। उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी देते समय चिकित्सक ने मुझसे कहा–'ऐसे खतरनाक हादसे में आपका सुरक्षित बच जाना ईश्वर का चमत्कार है। तुम पर ईश्वर की कृपा हुई है,शायद वो आगे तुमसे कुछ काम लेना चाहता हो। उस वक्त चिकित्सक की कही बात को मैं समझ नहीं पाया था। उस हादसे के तीस साल बाद इस्लाम कबूल करने पर मुझे अच्छी तरह समझ आ गया है कि आखिर ईश्वर ने उस हादसे में मुझे क्यों बचाया था।

अगर मैं इस्लाम ना अपनाता तो एक खिलाड़ी के रूप में इतना कामयाब ना होता। इस्लाम ने मुझे नैतिक सम्बल दिया।

–करीम अब्दुल जब्बार

अमेरिका के मशहूर बास्केटबॉल खिलाड़ी

करीम अब्दुल जब्बार अमेरिकी नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन के छह बार बेशकीमती खिलाड़ी के रूप में चुने गए। उन्हें बास्केटबॉल का हर समय महान खिलाड़ी माना गया।

इस्लाम ने मुझे नैतिक सम्बल दिया

करीम अब्दुल जब्बार अपन हरलेम के बाशिन्दे थे और फरडीनेन्ड लेविस एलसिण्डर के रूप में पैदा हुए। बास्केटबॉल में एक नया शॉट स्काई हुक ईजाद करने वाले करीम अब्दुल जब्बार ने इस शॉट के जरिए बास्केटबॉल खेल में अपनी खास पहचान बनाई। सबसे पहले करीम अब्दुल जब्बार ने इस्लाम हम्मास अब्दुल खालिस नामक एक मुस्लिम व्यक्ति से सीखा। खालिस ने उन्हें बताया कि हर एक को चाहे वह नन हो,संन्यासी,अध्यापक,खिलाड़ी अथवा टीचर,सभी को संजीदगी से ईश्वरीय आदेश पर गौर करना चाहिए। इस बात पर ध्यान देने के बाद वे खालिस की इस्लामिक बातों पर चिंतन करने लगे,साथ ही उन्होंने कुरआन का अध्ययन करना शुरू कर दिया। कुरआन अच्छी तरह समझने के लिए उन्होंने बेसिक अरबी सीखी। उन्होंने इस्लाम को अच्छी तरह सीखने के मकसद से 1973 में सऊदी अरब और लीबिया का सफर किया।

वे सर्वशक्तिमान ईश्वर में अटूट भरोसा करते हैं और साथ ही उनका पुख्ता यकीन है कि कुरआन अल्लाह का आखरी आदेश है और मुहम्मद सल्ललाहो अलैहेवसल्लम अल्लाह के आखरी पैगम्बर हैं।

करीम अब्दुल जब्बार स्वीकार करते हैं कि जितना उनसे मुमकिन होगा वे इस्लाम के मुताबिक जिंदगी गुजारने की कोशिश करेंगे।

ये अंश करीम अब्दुल जब्बार की किताब ' करीम ' से लिए गए हैं जो 1990 में प्रकाशित हुई थी। इस किताब में उन्होंने अपने इस्लाम कबूल करने के कारणों पर प्रकाश डाला है।।

........अमेरिका में बड़ा होकर आखिरकार मैंने पाया कि जज्बाती और रूहानी तौर पर मैं जातिवादी विचारधारा की संकीर्णता में नहीं बंध सकता। जैसे जैसे मैं बड़ा हुआ तो मुझे यही समझ आया कि काले लोग या तो बहुत अच्छे हैं या फिर बहुत खराब। मेरे इर्द गिर्द ऐसा ही कुछ था। वह काला आदमी जिसका मेरे जीवन पर गहरा असर पड़ा मैलकम एक्स था। मैं रोज काले मुस्लिमों का अखबार मुहम्मद स्पीक्स पढ़ता था। लेकिन साठ के शुरूआत में काले मुस्लिमों की जातिवाद की संकीर्ण सोच मुझे मंजूर नहीं

थी। इस सोच में गौरे लोगों के प्रति उनकी उसी तरह की दुश्मनी दिखाई पड़ती थी,जैसी कि गौरों की कालों के प्रति थी। यही वजह है कि मैं इस विचारधारा के खिलाफ था। मेरा मानना था कि क्रोध और नफरत से आप किसी चीज को थोड़ा ही बदल सकते हैं।

.... लेकिन मैलकम एक्स एक अलग ही व्यक्तित्व था। इस्लाम कबूल करने के बाद वह मक्का हज करने गया और उसने वहां जाना कि इस्लाम तो सभी रंगों के लोगों को सीने से लगाता है। बदकिस्मती से 1965 में उसकी हत्या कर दी गई। हालांकि तब मैं उसके बारे मे ज्यादा नहीं जानता था लेकिन मुझे बाद में मालूम हुआ कि वह कालों की उन्नति और खुद की मदद खुद करने की बात करता था। मैं सबके साथ समान व्यवहार करने की उसकी सोच को पसंद करता था।

.........1966 में मैलकम एक्स की जीवनी पर किताब छपकर आई जिसे मैंने पूरी पढ़ डाली। उस वक्त मैं उन्नीस साल का हुआ ही था। इस किताब ने मेरे जीवन पर ऐसी छाप छोड़ी जो अब तक कोई किताब नहीं छोड़ पाई थी। इस किताब ने मेरी जिंदगी की दिशा ही बदल दी। मैं सब चीजों को अलग ही नजरिए से देखने लगा। मैलकम ने गौरों और काले लोगों के बीच आपसी सहयोग का माहौल बनाया। वह सच्ची बात करता था। इस्लाम की बात करता था। मैं भी उसकी राह चल पड़ा और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

टाल्क एशिया से साक्षात्कार

यह साक्षात्कार 2 जुलाई 2005 को टाल्क एशिया के स्टेन ग्रान्ट ने लिया था।

- **आप लेविस एलसिण्डर से करीम अब्दुल जब्बार हो गए। आप लेविस एलसिण्डर से करीम अब्दुल जब्बार होने के सफर के बारे में बताएं? क्या अब भी आपके अन्दर कुछ लेविस एलसिण्डर बाकी है?**

मैंने लेविस एलसिण्डर से बाहर निकलकर ही अपना जीवन शुरू किया है। मैं अब भी अपने माता-पिता का बच्चा हूं। मेरे लिए मेरे चचेरे भाई वैसे ही हैं लेकिन मैंने एक नया रास्ता चुना। मैं सोचता हूं कि यह रास्ता मेरी बेहतरी के लिए है। मैं करीम अब्दुल जब्बार के रूप में बेहतर इंसान बना हूं। मुझे इसका अफसोस नहीं है कि मैं क्या था और क्या हो गया।

- ***इस्लाम के मुताबिक जिंदगी गुजारने पर आपको कैसा महसूस हुआ?***

अगर मैं इस्लाम ना अपनाता तो एक खिलाड़ी के रूप में इतना कामयाब ना होता। इस्लाम ने मुझे नैतिक सम्बल दिया। इस्लाम ने मुझे पूरी तरह भौतिकवादी बनने से बचाया और साथ ही मुझे दुनिया को देखने का एक खास नजरिया दिया। मेरे लिए यह आसान इसलिए भी हुआ कि मेरे नजदीकी लोगों ने मेरा साथ दिया। मेरे माता-पिता,मेरे कोच जॉन वूडन मेरे साथ थे।

- ***इस्लाम स्वीकार करने पर क्या लोगों ने आपसे दूरी बना ली या आपके साथ उनके व्यवहार में किसी तरह का बदलाव आया?***

मैं लोगों से नरमी के साथ पेश आया। मैंने अपने कंधे पर पहचान की कोई पट्टी नहीं बांध रखी थी। मैं तो लोगों को सिर्फ यह समझाता था कि मैं मुस्लिम हूं और जैसा कि मैंने महसूस किया मेरे हक में यह रास्ता सबसे बेहतर था।

मेरी सोच यह नहीं रही कि दूसरे मुझे स्वीकार करे तो ही मैं उनको स्वीकार करूं। और ना ही ऐसा था कि अगर आप मेरे दोस्त हैं तो आपको भी मुस्लिम बनना पड़ेगा। मैंने लोगों की भावनाओं का सम्मान किया,जैसा कि मैं भी उम्मीद करता था कि लोग मेरी भावनाओं का भी सम्मान करें।

- ***उस व्यक्ति को कैसा महसूस होता होगा जब उसको पुराने नाम के बजाय एक नए नाम से पुकारा जाए? आप में कितना बदलाव आया?***

इस्लाम ने मुझे बहुत सहनशील बना दिया। मैंने कई बातों में अन्तर पाया। जैसा कि आप जानते हैं मैं अलग हूं लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते कि मैं कहां से जुड़ा रहा हूं।

यही वजह है कि अमेरिका में 11 सितम्बर के हमले के बाद मुझे अपने बारे में लोगों को काफी समझाने की जरूरत पड़ी।

■ ***क्या इस्लाम कबूल करने वाले आप जैसे लोगों के लिए कोई बंदिश या इसमें रोड़ा बनने वाला कोई नियम या प्रावधान है? क्या आप ऐसा महसूस करते हैं?***

नहीं, मैं ऐसा महसूस नहीं करता,लेकिन हां, मुझे दुख हुआ कि बहुत से लोगों ने मेरी वफादारी पर सवाल उठाए। लेकिन मैं तो शुरू से ही एक देशभक्त अमेरिकन रहा हूं।

■ ***बहुत से काले अमेरिकी इस्लाम कबूल कर रहे हैं जो कि एक तरह से सियासत से जुड़ा मामला नजर आता है। क्या आपका मामला भी ऐसा ही कुछ रहा?***

इस्लाम का चुनाव मेरा राजनैतिक फैसला नहीं था। यह आत्मा से लिया गया फैसला था। बाइबिल और कुरआन पढ़ने के बाद मैं यह समझने काबिल हुआ कि कुरआन बाइबिल के बाद आया हुआ ईश्वरीय संदेश है। मैंने कुरआन की शिक्षा पर चिंतन किया और इसका अनुसरण किया। मैं नहीं मानता कि जिसको जो तालीम अच्छी लगती हो उस पर अमल करने से कोई उसे रोकता हो। कुरआन हमें बताता है कि सभी इंसानों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए और यहूदी,ईसाई और मुस्लिम एक से पैगम्बरों को मानते हैं।

■ ***आपके लेखन में भी इस तरह का प्रभाव देखने को मिलता है।***

हां,इसमें है। जातीय बराबरी न होने का कड़वा अनुभव मुझे तब हुआ जब मैं अमेरिका में बच्चा ही था। मुझ पर सिविल राइट्स मूवमेंट का गहरा असर पड़ा। मैंने देखा लोग अपना जीवन खतरे में डाल रहे थे। वे पिटते थे। उन पर कुत्तों से हमला किया जा रहा था। उन पर गोलियां बरसाई जा रही थीं, फिर भी वे अंहिसात्मक तरीके से मुकाबला कर रहे थे। इसने मेरे जीवन पर गहरा असर डाला।

मैंने इस्लामिक प्रार्थना में विनम्रता और आत्मीयता महसूस की है। दूसरी तरफ इंग्लैण्ड के लोग भौतिकवादी और उथले हैं। वे खुश होने का दिखावा करते हैं लेकिन खुशी उनसे कोसों दूर है।

–अब्दुर्रहीम ग्रीन

इंग्लैण्ड, पहले ईसाई अब इस्लामिक विद्वान

तंजानिया में जन्में और ब्रिटेन में पले बढ़े 45 वर्षीय ग्रीन का इस्लाम से परिचय मिस्र में हुआ जहां वे अक्सर अपनी छुट्टियां बिताते थे। अक्टूबर 1997 में उन्होंने गॉड्स फाइनल रिवेलेशन विषय पर बंगलौर में लेक्चर दिया। इस दौरान बंगलौर से अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका इस्लामिक वॉइस ने उनका इन्टरव्यू लिया। यहां पेश है उस वक्त लिया गया अब्दुर्रहीम ग्रीन के इन्टरव्यू का हिन्दी अनुवाद।

कुरआन ने मुझ पर जादुई असर डाला

अब्दुर्रहीम ग्रीन इस्लामिक दुनिया में एक जाना पहचाना नाम है। वे पिछले बीस सालों से ब्रिटेन में इस्लामिक मूल्यों के प्रचार प्रसार में जुटे हैं। वे इस्लामिक चैनल पीस टीवी और अन्य इस्लामिक चैनल्स के जरिए भी इस्लाम को बेहतर तरीके से दुनिया के सामने रख रहे हैं। वे पहले ईसाई थे लेकिन ईसाई आस्था से उनका जल्दी ही मोहभंग हो गया। सुकून की तलाश में अब्दुर्रहीम ग्रीन ने कई धर्मों का अध्ययन किया। इस दौरान उन्होंने कुरआन पढ़ना शुरू किया। वे कुरआन से बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने कुरआन में अपने हर सवाल का जवाब पाया। वे इस नतीजे पर पहुंचे की कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है और फिर अब्दुर्रहीम ग्रीन ने 1988 में इस्लाम कबूल कर लिया।

अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि बताएं?

मैं 1964 में तंजानिया के दारुस्सलाम में पैदा हुआ। मेरे माता-पिता दोनों ब्रिटेन के थे। मेरे पिता गेविन ग्रीन ब्रिटेन उपनिवेशवाद में एडमिनिस्ट्रेटर थे। बाद मे उन्होंने 1976 में बारक्लेज बैंक जॉइन कर लिया और उन्हें इजिप्टियन बारक्लेज बैंक को जमाने के लिए इजिप्ट भेजा गया। मैंने मशहूर रोमन कैथोलिक मोनेस्टिक स्कूल एम्पलेफोर्थ में पढ़ाई की और बाद में इतिहास का अध्ययन करने लन्दन यूनिवर्सिटी चला गया। हालांकि मैंने बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी।

अभी मैं इंग्लैण्ड की एक इस्लामिक मीडिया कम्पनी के साथ काम कर रहा हूं। इस्लाम के मैसेज को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने में जुटा हूं।

आपने बीच में ही पढ़ाई क्यों छोड़ दी?

मेरा ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली से मोहभंग हो गया था। दरअसल ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली में विश्व इतिहास को प्रायोजित तरीके से पेश किया गया था। उन्होंने अपनी सभ्यता को महिमामण्डित करके यूरोप पर थोपा है। इजिप्ट में रहने के दौरान कुछ आलीशान खण्डहर देखकर मुझे लगा कि यह तो अच्छे पुरातत्ववेत्ताओं का काम था। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि पश्चिम ने इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश किया है। मैंने दुनिया के विभिन्न लोगों और सभ्यताओं के इतिहास का अपने स्तर पर अध्ययन करना शुरू किया। मैंने विभिन्न धर्मग्रंथों और दर्शनशास्त्र को भी पढ़ा। मैंने तीन साल तक गहराई से बोध धर्म का भी अध्ययन किया। इस दौरान मैंने जब कुरआन पढ़ा तो मैं इससे बेहद प्रभावित हुआ। कुरआन की शिक्षा ने मुझ पर जादुई असर डाला और मुझे पूरी तरह यकीन हो गया कि कुरआन सच्चे ईश्वर की तरफ से भेजा गया धर्मग्रन्थ है। मैं नहीं जानता कि मैं किस तरह इस्लाम की छांव में आ पहुंचा। मेरा भरोसा है कि ईश्वर ही ने मुझे सही राह दिखाई।

फिर भी आपको इस्लाम में ऐसा क्या खास लगा जिससे आप सबसे ज्यादा प्रभावित हुए?

दरअसल आठ साल की उम्र में ही मेरा ईसाइयत से मोहभंग होने लगा था। *मैरी की जय* जैसे गीतों के जरिए जो कुछ हमें पढ़ाया जाता था, वो मेरे गले नहीं उतरता था। जहां एक तरफ ईसाई ईश्वर को अनन्त और अपार बताते थे,वहीं गॉड को मैरी की कोख से पैदा होना बताने में भी उन्हें कोई झिझक नहीं थी। मुझे लगता था इस हिसाब से तो मैरी गॉड से भी बड़ी हुई।

दूसरा ईश्वर का तीन रूपों में होने का ईसाई मत भी मुझे समझ नहीं आता था। ईश्वर का तीन रूपों में बंटे होना और फिर भी एक होने को मैं पचा नहीं पाता था। मेरे लिए मुश्किल तब हो गई जब एक इजिप्टियन ने मेरे से ईसाई धर्म संबंधी कई तीखे सवाल कर डाले। ईसाई मत को लेकर कन्फ्यूज्ड होने के बावजूद मैंने उसके सामने एक सिद्धांतवादी ईसाई होने की कोशिश की जैसे कि अधिकतर गौरे मध्यमवर्गीय ईसाई करते हैं। मैं तब चकरा गया जब उसने मुझसे यह मनवा ही लिया कि ईश्वर जब सूली पर चढ़ाने से मर गया है तो फिर ईश्वर का अनन्त और अपार होने का ईसाई मत खोखला साबित हो जाता है। इस पर मुझे महसूस हुआ कि मैं ऐसी बेतुकी अवधारणा पर भरोसा कर रहा हूं जिसके मुताबिक दो और दो पांच होते हैं। यह दौर मेरी किशोर अवस्था का था।

धीरे-धीरे पश्चिम की बंधी बंधाई और मशीनी जिंदगी से मुझे नफरत सी होने लगी। मैंने पाया कि यूरोपियन लोगों की जिंदगी के संघर्ष का मकसद सिर्फ जिंदगी का लुत्फ उठाना और एंजोय करना है। वे अपने जीवन को किसी अच्छे और बड़े मकसद के लिए नहीं जीते।

मैंने जब फिलीस्तीन के मुद्दे पर इजिप्ट और फिलीस्तीन के लोगों से बात की तो समझ आया कि कैसे पश्चिमी देश अपने लोगों को इस मुद्दे पर बरगलाते रहते हैं। यहूदियों ने कई ऐतिहासिक,राजनैतिक और आर्थिक भ्रान्तियां गढ़कर मीडिया के जरिए जबरदस्त तरीके से प्रचारित की है। आखिर ऐसे कैसे हो सकता है कि 2000 साल पहले यह उनका देश था जिसे छोड़कर वे चले गए थे। मैंने यह भी जाना कि अभी के यहूदी वास्तविक रूप में गुलाम थे जो बाद में यहूदी बने और फिलीस्तीनी सरजमीन शुरु से हरी-भरी रही है। यह तो इजराइल ने गढ़ा है कि जादुई तरीके से यह रेगिस्तान से ग्रीनलैण्ड में तब्दील हो गई। मैंने जब लैटिन अमेरिका और सोवियत ब्लॉक में अमेरिका की भूमिका का अध्ययन किया तो अमेरिका का दोगला चरित्र देखने को मिला।

आपने इजिप्ट और इंग्लैण्ड के लोगों में किस तरह का फर्क महसूस किया?

मैंने पाया कि इजिप्ट के बाशिंदे गरीब और मेहनतकश होने के बावजूद खुशमिजाज हैं। वे अपनी सारी बातें अल्लाह पर छोड़ देते हैं और अपना गम भूल जाते हैं। वे इबादत में अल्लाह के सामने अपनी परेशानियां रखते हैं और अल्लाह उनकी मदद करता है। मैंने उनकी इस्लामिक प्रार्थना में विनम्रता और आत्मीयता महसूस की है।

दूसरी तरफ इंग्लैण्ड के लोग भौतिकवादी और उथले हैं। वे खुश होने का दिखावा करते हैं लेकिन खुशी उनसे दूर है। उनकी प्रार्थना में गाने हैं,डांस है,तालियां पीटना है लेकिन गॉड के प्रति विनम्रता और आत्मीयता उनकी प्रार्थनाओं में नजर नहीं आएंगी।

मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि पश्चिमी लोगों की मानसिकता यहूदी नियंत्रित मीडिया की देन है। इन्हीं में एक है फिलीस्तीन को लेकर पश्चिम के लोगों की सोच। मीडिया वहां के लोगों पर एक ही तरह की मानसिकता थोपता है। देखा गया है कि अमेरिका तीसरी दुनिया के देशों को प्रताड़ित करने के लिए मानवाधिकार का बहाना तलाशता रहता है जबकि खुद उन लैटिन अमेरिकी देशों के नेताओं को प्रताड़ित करता रहता है जो उसकी बात नहीं मानते। अमेरिकी मीडिया इन बातों की कभी आलोचना नहीं करता।

क्या इंग्लैण्ड में एक मुस्लिम के रूप में जिंदगी गुजारना मुश्किल है।

पश्चिमी मानसिकता व्यक्तिवादी है यानी दूसरों के बजाय हर कोई खुद की सोचता है। इस्लामिक जिंदगी के लिए यह परेशानी का कारण बनती है। नेक मुस्लिम इस तरह के माहोल से परेशानी महसूस करते हैं। हद से ज्यादा खुलापन और सैक्स के चलते उन्हें दिक्कतें होती हैं। इंग्लैण्ड की अधिकतर लड़कियां 13 साल की उम्र तक अपना कोमार्य खो चुकी होती हैं और सामान्यत एक लड़की के तीन-चार ब्वॉय फ्रैण्ड होते हैं।

पश्चिम के मुसलमानों के साथ दिक्कत यह है कि वे उस पाश्चात्य सोसायटी के साथ कैसे घुले-मिले जहां स्वच्छंदता,सैक्स और नशा आम है। वे खुद को इन सबसे कैसे बचाए रखें?

इंग्लैण्ड में इस्लाम के प्रचार के अच्छे नतीजे सामने आए हैं?

इंग्लैण्ड में इस्लामिक मूल्यों का धीरे-धीरे प्रचार-प्रसार हो रहा है। नव मुस्लिम्स में उत्साह है। वे जानते हैं कि आम आदमी का जीवन किस तरह अंधेरे में है।

आपके परिवार के बारे में बताएं?

मेरे दो बीवियां और छह बच्चे हैं।

क्या ब्रिटेन में बहू विवाह पर पाबंदी नहीं है?

यूं तो ब्रिटेन में दूसरे विवाह पर पाबंदी है लेकिन ब्रिटेन के कई लोगों ने दो विवाह कर रखे हैं। दूसरी शादी कॉमन लॉ वाइव्ज के तहत उचित है जिसमें दूसरी बीवी और उसके बच्चे विरासत के हकदार होते हैं।
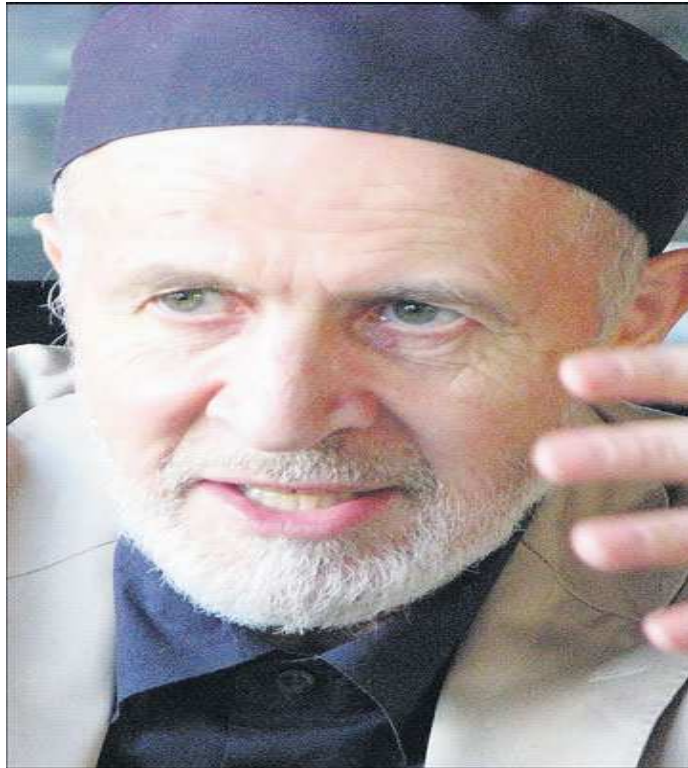
इस्लाम एक ऐसी स्वच्छ नदी है जिसमें तमाम संस्कृतियां घुलमिल कर एक साथ रह सकती हैं।

– पहले ***पीटर सैंडर्स***

अब ***अब्दुल अदीम***

इंग्लैण्ड के मशहूर फोटोग्राफर

अब्दुल अदीम एक फोटो प्रदर्शनी लगाने जकार्ता आए। रिपब्लिका में प्रकाशित इमान यूनियार्तो एफ़ द्वारा लिए गए उनके साक्षात्कार के प्रमुख अंश स्पैन मैगजीन ने प्रकाशित किए।

साभार: स्पैन,अंक:फरवरी-मार्च 2007,पेज:28-29

इस्लाम एक महान धर्म

पीटर सैंडर्स ने अपना कैरियर साठ के दशक के मध्य में शुरू किया। वे अपने वक्त के संगीत के सितारों बॉब डायलन,जिमी हैंडरिक्स, द डोर्स और रोलिंग स्टोन्स की अगली पीढ़ी के नुमाइंदे थे। लेकिन संगीत से सैंडर्स के दिल की प्यास नहीं बुझ सकी। 1970 के आखिर में उन्होंने भारत की आध्यात्मिक यात्रा की। साल भर बाद जब वे ब्रिटेन लौटे तो इस्लाम धर्म ग्रहण कर चुके थे और उन्होंने अपना नाम बदलकर अब्दुल अदीम रख लिया था।

सैंडर्स अब प्यासे नहीं थे। इस्लाम ने उनके काम को नई ऊर्जा दे दी थी। इसी वर्ष उन्होंने मुस्लिम देशों की यात्रा शुरू की। 1971 में उन्होंने काबा और हज यात्रियों की करीब से तस्वीरें खींची जो पहली बार पश्चिमी अखबारों-द सण्डे टाइम्स और द ऑब्जर्वर में छपीं।

आज अब्दुल अदीम मुस्लिम समाज के सबसे बड़े फोटोग्राफर के रूप में जाने जाते हैं,संभव है वे इकलौते भी हों।

1971 में भारत की यात्रा के बाद आपने इस्लाम धर्म अपना लिया। यह कैसे हुआ?

जब मैं बीस साल का हो रहा था,मौत के बारे में सोचता था कि क्या हम इसके बाद खत्म हो जाते हैं? यह सवाल मुझे आतंकित किए हुए था। आखिरकार मैंने संगीत में अपने कैरियर को छोड़ने का फैसला किया। मैं भारत गया और वहां पर हिंदू,बौद्ध,सिक्ख और इस्लाम धर्मों के बारे में सीखा।

आपने इस्लाम को ही क्यों चुना?

मैं पक्का नहीं जानता। खुदा ने मेरे लिए इसे चुना। लेकिन भारत में मेरे साथ एक अद्‌भुत घटना घटित हुई। एक सुबह मैं स्टेशन पर रेल का इंतजार कर रहा था। स्टेशन खचाखच लोगों से भरा था। भीड़ के बीच एक महिला ने अचानक मेरे बगल में अपनी जाजम बिछा ली और नमाज पढ़ने लगी। मेरे लिए यह घटना चौंकाने वाली थी। ऐसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैंने एक व्यक्ति से पूछा-यह सब क्या है? उसने जवाब दिया-यह मेरी दादी है। यह मुस्लिम है और प्रार्थना कर रही है। संभव है यही कारण रहा

हो। अल्लाह ने वह क्षण एक तस्वीर की तरह मुझे दिया जो आज भी मेरी स्मृतियों में है। जब मैं ब्रिटेन लौटा तो मेरे कई साथी नशे के लती हो चुके थे और कुछ इस्लाम धर्म अपनाकर इससे बचे हुए थे, तब मुझे लगा कि यही मेरा रास्ता है। इसके तीन महीने बाद मेरी जिंदगी में निर्णायक मोड़ आया। मैं हज करने मक्का गया और फिर मैंने चालीस विभिन्न मुस्लिम देशों की एक अंतहीन यात्रा शुरू कर दी।

आपको दुनिया का सबसे दिलचस्प हिस्सा कौनसा लगता है?

यह सवाल मुझसे अक्सर पूछा जाता है। मेरा जवाब यही होता है-ब्रिटेन। हालांकि मुझे अन्य स्थान भी पसंद है। मैं चीन तीन बार गया। मैं इस बार फिर वहां जाऊंगा। पूरी दुनिया दिलचस्प है और हर देश अपने आप में विशिष्ट है।

तस्वीरें खींचने के लिए एक यात्रा में आप कितना वक्त बिताते हैं?

जब मैं जवान था, एक देश में मैं छह महीने तक रह जाता था। लेकिन अब मैं दो सप्ताह से ज्यादा नहीं रुकता हूं खासकर कठिन इलाकों में।

आप विभिन्न देशों के लोगों से कैसे घुल मिल जाते हैं?

सिर्फ मुस्कराते रहना ही काफी है,इससे मैं संबंध बना लेता हूं। आप मानें या न मानें इंसान गजब की चीज है। वह जितना गरीब होता है उतना ज्यादा उदार होता है। चीन में नब्बे साल की एक वृद्धा से मैं मिला। यह जानकर कि मैं भी एक मुस्लिम हूं,उसने मुझे अपने यहां बुलाया। उसके यहां पहुंचते ही मैंने देखा कि वहां सिर्फ एक पतला गद्दा और एक दुबली बिल्ली थी। लेकिन इस्लाम हमें मेहमानों का सत्कार करना सिखाता है। उसने मेरा अच्छा स्वागत किया और सबसे अच्छे खाने लगाए। जिस देश में मैं पैदा हुआ,वहां के लोग बहुत संकुचित सोच के हैं। वे पहली मुलाकात में आपको अपने घर आने का न्यौता नहीं देंगे। लेकिन,हम दुनिया के गरीब लोगों में उनकी बदहाली के बावजूद यह दिलचस्प उदार भाव पाते हैं।

आपके द्वारा मुस्लिम समाज की ली गई तस्वीरें पश्चिम मीडिया में काफी छपी हैं। आपको उनसे क्या उम्मीद है?

कई घटनाओं ने मुस्लिमों के खिलाफ नफरत पैदा की है। अमेरिका में 9/11 और ब्रिटेन में 7/7 की घटना। ये लोग डरे हुए हैं। लेकिन आपको जानना चाहिए कि अधिकतर मुस्लिम अमन पसंद है। इस्लाम के मायने ही अमन के है। इस्लाम को हिंसा से जोड़ना गलत है।

मैंने संबंधों को जोड़ने की कोशिश की। मैं ब्रिटिश नागरिक हूं। मैं लन्दन में जन्मा हूं। इस्लाम का सम्मान करता हूं। इस्लाम एक महान धर्म है। मैं कई मुस्लिमों से मिलता हूं। सबसे बेहतर वे मुस्लिम हैं जो अपनी जिंदगी इस्लाम के मुताबिक गुजारते हैं।

क्या आप मुस्लिम समाज के खूबसूरत पक्ष की तस्वीरें उतारते हैं या सच्चाई बयान करने को प्राथमिकता देते हैं?

मैंने सकारात्मक तस्वीरें बनाने और मुस्लिमों की खूबसूरती को सामने लाने की कोशिश की है। हमें इस जीवन में खूबसूरती की जरूरत है। खुदा को भी खूबसूरत चीजें पसंद हैं। मैं अक्सर गरीब मुस्लिम समुदाय के बीच रहता हूं और मेरा मानना है कि इन लोगों में अब भी खूबसूरती और रहमदिली बाकी है।

तमाम यात्राओं के बाद मुस्लिम समुदाय के बारें में आपकी क्या राय है?

इस्लाम एक ऐसी स्वच्छ नदी है जिसमें तमाम संस्कृतियां घुलमिल कर एक साथ रह सकती हैं। जब इस नदी की धारा काली चट्टानों से होकर गुजरती है तो पानी काला दिखता है और जब यही धारा पीली चट्टान पर से गुजरेगी तो पानी पीला दिखेगा। यही वजह है कि अफ्रीका में इस्लाम अफ्रीकी है,यूके में इस्लाम ब्रितानी है और चीन में चीनी इस्लाम है।

आपका एक प्रोजेक्ट परंपरागत मुस्लिम समुदायों के बारे में दस्तावेजीकरण का है। क्यों?

मैंने पैंतीस साल यात्राएं की और पाया कि इस्लाम पारंपरिक माहौल में बेहतर पनप सकता है जहां कुछ विशिष्ट समुदाय पैदा हो जाते हैं। लेकिन आधुनिक विश्व में यह चीज खत्म हो रही है। पारंपरिक इस्लाम मॉरिशेनिया जैसे स्थानों पर ही बचा है। जहां लोग एक दूसरे की रक्षा करते हैं और अध्यात्म के उच्चतम स्तर पर आपस में जुड़े हैं। यह मैंने पश्चिम में नहीं पाया। मैंने अपने बच्चों को ऐसा माहौल देने की कोशिश की लेकिन ऐसा नहीं हो सका। मैं क्या करता? मैं जबरदस्ती नहीं कर सकता। इस्लाम में जोर जबरदस्ती नहीं चलती। अपनी समझ से ही सच्चाई तक पहुंचा जा सकता है। मैंने इंडोनेशिया में देखा कि यहां आधुनिकता और परंपरागत मान्यताओं के बीच एक संतुलन है।